

ज्वाला एक्सप्रेस न्यूज



आर.एन.आई. नं. :- CHHHIN/2021/82386

सच्ची खबर सबसे पहले

online- jwalaexpress.com

वर्ष - 05, अंक -34

दुर्ग (छ.ग.), दिनांक 23 अप्रैल से 29 अप्रैल 2026 (प्रत्येक गुरुवार)

पृष्ठ - 8, मूल्य - 05 रुपए

जनजातीय अंचल में खेलों के जरिए बदलाव की नई लहर - सचिन तेंदुलकर का दौरा प्रेरणादायी: मुख्यमंत्री

सचिन तेंदुलकर का बस्तर आगमन बदलते बस्तर की सशक्त पहचान : मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय

रायपुर(ज्वाला एक्सप्रेस)। मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने माँ दत्तेश्वरी की पावन धरा पर भारत रत्न और क्रिकेट के महानायक सचिन तेंदुलकर के आगमन पर सोशल मीडिया हैंडल एक्स पर पोस्ट करते हुए कहा कि दत्तेवाड़ा जिले के सुदूर वनांचल क्षेत्र छिंदनार ग्राम में सचिन तेंदुलकर का आगमन बदलते हुए बस्तर की सशक्त पहचान है। यह उस नए बस्तर की तस्वीर प्रस्तुत करता है, जो अब भय और असुरक्षा की छाया से निकलकर विकास, अवसर और आत्मविश्वास की दिशा में तेजी से आगे बढ़ रहा है। उन्होंने विश्वास व्यक्त किया कि इस तरह की पहल बस्तर के युवाओं को नई दिशा देंगी और उन्हें अपने सपनों को साकार करने के लिए प्रेरित करेंगी। मुख्यमंत्री श्री साय ने कहा कि सचिन तेंदुलकर द्वारा बच्चों के बीच जाकर समय बिताना, उन्हें खेलों के प्रति प्रेरित करना और उनके भीतर आत्मविश्वास का संचार करना इस अभियान को और अधिक प्रभावशाली बनाता है। इससे न केवल खेल प्रतिभागों को निखरने का अवसर मिलेगा, बल्कि युवाओं में अनुशासन, टीम भावना और सकारात्मक ऊर्जा का भी संचार होगा।



मुख्यमंत्री ने कहा कि सचिन तेंदुलकर फ़ंडेशन एवं माणदेशी फ़ंडेशन द्वारा संचालित 'मैदान कप अभियान' खेल अधोसंरचना के विकास की दिशा में एक दूरदर्शी पहल है। विशेष रूप से जनजातीय अंचलों में बच्चों को खेल मैदान और बेहतर सुविधाएं उपलब्ध कराने का यह प्रयास बच्चों के सर्वांगीण विकास में

महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगा। मुख्यमंत्री ने कहा कि राज्य सरकार खेल और युवा विकास को सर्वोच्च प्राथमिकता दे रही है तथा भविष्य में भी इस दिशा में निरंतर प्रयास जारी रहेंगे। मैदान के उद्घाटन के पश्चात सचिन तेंदुलकर ने देश की युवा प्रतिभाओं को तराशने की दिशा में अपनी प्रतिबद्धता दोहराते हुए कहा कि भविष्य के चैंपियन तैयार करने के लिए केवल व्यक्तिगत जुनून पर्याप्त नहीं है, बल्कि जमीनी स्तर पर आधुनिक और सुदृढ़ खेल सुविधाओं का होना अनिवार्य है। इस दौरान सचिन ने खुद को केवल

क्रिकेट पिच तक सीमित न रखते हुए वॉलीबॉल और अन्य मैदानी खेलों के महत्व पर भी चर्चा की। उन्होंने बच्चों को प्रेरित करते हुए बताया कि विभिन्न खेलों में भागीदारी करने से खिलाड़ियों की रणनीतिक समझ और मानसिक परिपक्वता बढ़ती है। फ़ंडेशन की इस दूरगामी पहल के तहत क्षेत्र के 50 गाँवों में इसी तरह के खेल मैदान विकसित किए जा रहे हैं, जहाँ क्रिकेट के साथ-साथ फुटबॉल और कबड्डी जैसी विधाओं को भी समान रूप से बढ़ावा दिया जाएगा। इसके साथ ही सचिन तेंदुलकर ने छात्रों को प्रेरणा देते हुए कहा कि उन्होंने एक अपनी जीवन की शुरुआत मैदान से ही प्रारंभ किया था और आज इन सभी बच्चों को देख कर पुरानी यादें ताजा हो रही हैं। उन्होंने छात्रों को इंगित करते हुए कहा कि यहां सब ऐसे हीरो उपस्थित हैं जिन्हें तराशा जाना है क्योंकि हीरो की कीमत उसके पॉलिश करने के उपरांत ही होती है और उन्हें खुशी है कि माणदेशी फ़ंडेशन के कोच बच्चों की प्रतिभा को तराशने का काम बखूबी कर रहे हैं उन्हें आगे कहा कि जीवन में कड़ी मेहनत, अनुशासन और प्रतिभा का संगम ही व्यक्ति को ऊंचाइयों पर ले जाता है अतः सफलता के लिए जरूरी है कि

छात्र जीवन में प्रतिभा के साथ-साथ अनुशासन एवं कड़ी मेहनत सर्वाधिक जरूरी- तेंदुलकर

छत्तीसगढ़ के दत्तेवाड़ा जिले का स्वामी आत्मानंद हिन्दी मीडियम हाई स्कूल छिंदनार गाँव बुधवार को एक ऐतिहासिक बदलाव का साक्षी बना, जहाँ क्रिकेट जगत के दिग्गज सचिन तेंदुलकर ने सचिन तेंदुलकर एवं मानदेशी फ़ंडेशन द्वारा निर्मित मल्टी-स्पोर्ट्स ग्राउंड का उद्घाटन किया। इस महत्वपूर्ण अवसर पर मानदेशी फ़ंडेशन की फ़ंडर चेतना सिन्हा भी सचिन के साथ मौजूद रही, जो इस क्षेत्र में बुनियादी विकास और महिला सशक्तिकरण की दिशा में मिलकर कार्य कर रही हैं। कार्यक्रम में तेंदुलकर परिवार की वीसप उपस्थित रही। कार्यक्रम की शुरुआत में सचिन, सारा और सोनिया ने विभिन्न खेल गतिविधियों में उत्साहपूर्वक भाग लेकर बच्चों का मनोबल बढ़ाया। उन्होंने न केवल बच्चों को खेलों के प्रति प्रेरित किया, बल्कि स्वयं भी उनके साथ शामिल होकर एक सकारात्मक वातावरण तैयार किया। कार्यक्रम के दौरान रस्साकशी, वॉलीबॉल, दौड़ और खो-खो जैसे रोचक खेल आयोजित किए गए, जिनमें बच्चों ने पूरे जोश और उमंग के साथ हिस्सा लिया। इन गतिविधियों से बच्चों में टीम भावना, आत्मविश्वास और खेल भावना का विकास हुआ। साथ ही, सचिन, सारा और सोनिया के सहयोग से बच्चों को प्रोत्साहन मिला और वे नई ऊर्जा के साथ आगे बढ़ने के लिए प्रेरित हुए। उल्लेखनीय है कि छिंदनार के गाँव के ही छात्र छात्राएं भूमिका ठाकुर, नियासा मोर्य, निर्मला तरमा, पायल ठाकुर, सीताराम पुनर्म, अभित कुमार द्वारा श्री सचिन तेंदुलकर को खेल गतिविधियों के बारे में जानकारी दी।

हम शॉर्टकट न अपनाए और उपरोक्त सिद्धांतों पर अमल करें।

इस मौके पर श्री तेंदुलकर ने अपने जीवन में पिता की भूमिका का भी स्मरण किया। उन्होंने छात्रों से आग्रह किया कि खेल के साथ-साथ पढ़ाई में भी संतुलन बना कर चले। इसके

अलावा श्री तेंदुलकर ने कहा कि सचिन तेंदुलकर फ़ंडेशन के प्रारंभ होने में उनकी पत्नी अंजली का सर्वाधिक योगदान है। और अब उनकी पुत्री सारा, पुत्र अर्जुन, तथा बहु सानिया भी उसी नक्शे कदम पर चलकर फ़ंडेशन कार्य को आगे बढ़ा रही हैं।

3147 करोड़ के मेगा प्रोजेक्ट का काम शुरु, पत्थलगांव-झारखंड सीमा तक सड़क निर्माण ने पकड़ी गति

रायपुर-धनबाद इकोनॉमिक कॉरिडोर का सबसे महत्वपूर्ण हिस्सा अब धरातल पर

रायपुर(ज्वाला एक्सप्रेस)। प्रधानमंत्री श्री नरेंद्र मोदी द्वारा छत्तीसगढ़ राज्य की रजत जयंती पर रखी गई आधारशिला अब धरातल पर उतर आई है। भारतीय राष्ट्रीय राजमार्ग प्राधिकरण (एन.एच.ए.) ने पत्थलगांव-कुनकुरी से छत्तीसगढ़-झारखंड सीमा (एच.1-43) तक 3147 करोड़ रूपये की लागत वाले मेगा परियोजना का निर्माण कार्य जमीनी स्तर पर शुरू कर दिया है।



झारखंड सीमा खंड पर निर्माण कार्य ने गति पकड़ ली है।

382 छोटी-बड़ी संरचनाएं

इस खंड में कुल 382 छोटी-बड़ी संरचनाएं (पुल, अंडरपास आदि) बनाई जाएंगी, जो इस मार्ग को बाधा रहित बनाएंगी। जिसमें 7 बड़े पुल, 30 छोटे पुल, 6 फ्लाईओवर और एक एलीवेटेड वायडकट स्ट्रक्चर, 10 वेहिकुलर अंडरपास (ड्रिफ्ट), 18 लाइट वेहिकुलर अंडरपास (स्ट्रक्चर), 26 स्मॉल वेहिकुलर अंडरपास (स्ट्रक्चर), 11

ईओपी, 21 मवेशी एवं पैदल यात्री अंडरपास (ड्रिफ्ट) और 278 बॉक्स पुलिया (छहहू-1दहहूह) का निर्माण किया जा रहा है।

इंटर-स्टेट कनेक्टिविटी होगी मजबूत

कोरबा परियोजना इकाई के परियोजना निदेशक श्री डी.डी. पालावर ने बताया कि यह खंड रायपुर-धनबाद कॉरिडोर की रीढ़ है जिसका निर्माण कार्य शुरू हो गया है। हमारा लक्ष्य इसे निर्धारित समय-सीमा के भीतर पूरा करना है। यह राजमार्ग छत्तीसगढ़ और झारखंड



के बीच इंटर-स्टेट कनेक्टिविटी और व्यापारिक परिवहन को नई मजबूती देगा।

जशपुर जिले की बदलेगी तकदीर

यह कॉरिडोर जशपुर जिले के लिए केवल सड़क नहीं, बल्कि लाइफलाइन साबित होगा। इसे इस प्रकार डिजाइन किया गया है कि यह अंचल के महत्वपूर्ण नगरों पत्थलगांव, कांसाबेल, कुनकुरी, लुलदुला और जशपुर को एक सूत्र में पिरोएगा। साथ ही, यह राजमार्ग रायपुर, बिलासपुर, रायगढ़

और कोरबा जैसे औद्योगिक शहरों को सीधे झारखंड के धनबाद से जोड़कर व्यापारिक सुगमता प्रदान करेगा।

तेज और सुरक्षित कनेक्टिविटी

तेज और सुरक्षित कनेक्टिविटी के परिणामस्वरूप ईंधन,

यात्रा समय और कुल परिवहन लागत में बचत होगी। छत्तीसगढ़ और झारखंड के बीच कोयला खदानों एवं कोरबा, रायगढ़, जशपुर, रांची और जमशेदपुर में स्थित प्रमुख इस्पात संयंत्रों के लिए बेहतर अंतर-राज्यीय कनेक्टिविटी प्रदान करेगा। यातायात में सुगम आवागमन एवं दुर्घटनाओं और प्रदूषण में कमी होगी। वस्तुओं और खनिजों के कुशल परिवहन से आर्थिक विकास को बढ़ावा मिलेगा। स्थानीय समुदायों के लिए रोजगार व व्यावसायिक अवसरों का सृजन होगा।

कृषि मंत्री नेताम ने मिट्टी एवं बीजों की पूजा की और ट्रैक्टर चलाकर बीजों की बुआई की

रायपुर(ज्वाला एक्सप्रेस)। कृषि विकास एवं किसान कल्याण कृषि मंत्री श्री रामविचार नेताम ने आज अक्की तिहार के अवसर पर ट्रैक्टर चलाकर सीड डील से धान बीज का रोपण किया और बाड़ी में सब्जियों के बीजों की बुआई की। कृषि मंत्री ने अच्छी फसल के लिए

धरती माता से प्रार्थना की और गौ माता को चारा भी खिलाया। उन्होंने इस अवसर पर किसानों को उन्नत बीज, खाद एवं कृषि यंत्र भी वितरित किये। अक्की तिहार का आयोजन इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय के अंतर्गत संचालित समस्त महाविद्यालयों, अनुसंधान प्रक्षेत्रों तथा कृषि विज्ञान केन्द्रों में भी किया गया। मंत्री श्री नेताम इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय में अक्षय तृतीया के अवसर पर “ अक्की तिहार ” के राज्य स्तरीय समारोह में शामिल हुए। मंत्री श्री नेताम ने इस अवसर पर कृषि विश्वविद्यालय प्रक्षेत्र में माटी पूजन, बीज पूजन तथा ठाकुर देवता की पूजा अर्चना कर खेती किसानों के नए कार्यों की शुरुआत की। समारोह को संबोधित करते हुए कृषि मंत्री श्री नेताम ने कहा कि हमें कृषि में रासायनिक उर्वरकों का उपयोग कम करते हुए जैविक खेती की तरफ बढ़ना चाहिए। उन्होंने कहा कि छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा रासायनिक उर्वरकों के स्थान पर जैव उर्वरकों एवं जैविक खाद के उपयोग को बढ़ावा दिया जा रहा है जो मिट्टी और पर्यावरण की सेहत के लिए अधिक सुरक्षित है। कृषि मंत्री ने कहा कि राज्य शासन द्वारा रासायनिक उर्वरकों को उपयोग को कम करने के लिए सुनियोजित रणनीति बनाई गई है जिसमें इंदिरा गांधी कृषि विश्वविद्यालय भी तकनीकी सहयोगी के रूप में मदद कर रहा है।

शहरों में पेयजल आपूर्ति, अवैध प्लॉटिंग और अवैध निर्माण पर उप मुख्यमंत्री -अरुण साव सख्त



अगले एक वर्ष में पेयजल समस्याओं के स्थायी समाधान के निर्देश, अवैध प्लॉटिंग और अवैध निर्माण पर कड़ाई बरतने को कहा

रायपुर(ज्वाला एक्सप्रेस)। उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री अरुण साव ने प्रदेश के सभी नगर निगमों और नगर पालिकाओं के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने रायपुर के सिविल लाइन स्थित सर्किट हाउस में दिनभर चली बैठक में शहरों में पेयजल आपूर्ति की समस्याओं, अवैध प्लॉटिंग और अवैध निर्माण पर नगराजगी जाहिर करते हुए इनके निराकरण के लिए तत्काल कदम

विभाग के पांचों संभागीय क्षेत्रीय कार्यालयों के संयुक्त संचालक भी बैठक में मौजूद थे।

उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव ने समीक्षा बैठक में नगर निगमों और नगर पालिकाओं के अधिकारियों को शहरों की जरूरत के मुताबिक कार्ययोजना बनाकर काम करने के निर्देश दिए। उन्होंने निकायों की व्यवस्था और छवि सुधारने सक्रियता व गंभीरता से काम करने को कहा। उन्होंने कहा कि नगर निगम ऐसा काम करें जिससे राज्य की नगर पालिकाएं प्रेरणा ले सकें और नगर पालिका इस तरह से काम करें जिनसे नगर पंचायतें प्रेरित हो सकें। उन्होंने निकायों के अभियंताओं से कहा कि काम की गुणवत्ता को लेकर शिकायतें नहीं आना चाहिए। सभी निर्माण कार्य समय-सीमा में पूर्ण हों, इस पर विशेष ध्यान दें। उप मुख्यमंत्री श्री साव ने पेयजल आपूर्ति की लगातार आ रही शिकायतों पर नाबुखी और नगराजगी जाहिर करते हुए अगले वर्ष तक सभी नगर निगमों में इसके स्थाई समाधान के निर्देश दिए।

मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े के प्रयासों से आजादी के बाद पहली बार दर्जनों टोलों के विद्युतीकरण को मिली मंजूरी

महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े

रायपुर(ज्वाला एक्सप्रेस)। प्रदेश के मुख्यमंत्री श्री विष्णु देव साय के नेतृत्व और मार्गदर्शन में छत्तीसगढ़ सरकार द्वारा दूरस्थ क्षेत्रों के समग्र विकास को नई गति मिल रही है।

इसी क्रम में राज्य की महिला एवं बाल विकास तथा समाज कल्याण मंत्री श्रीमती लक्ष्मी राजवाड़े के विशेष प्रयासों से आजादी के बाद पहली बार सूरजपुर जिले के वनांचल क्षेत्रों में बिजली पहुंचाने की दिशा में बड़ी पहल साकार हुई है। भटगांव विधानसभा क्षेत्र के चांदनी बिहारपुर क्षेत्र के दर्जनों गांवों और आश्रित टोलों के विद्युतीकरण के लिए छत्तीसगढ़ स्टेट पावर डिस्ट्रीब्यूशन कंपनी लिमिटेड (एस.एस.पी.डी.) द्वारा तकनीकी स्वीकृति प्रदान करते हुए कार्य आदेश जारी कर दिए गए हैं।

मंत्री श्रीमती राजवाड़े की पहल पर कोल्हुआ: पुराना स्कूलपारा, खासपारा, जमतोपारा और बोकराटोला-2 के

विद्युतीकरण को मंजूरी दी गई

महुली: हरिजनपारा, खासपारा-1 व 2, पांडोपारा, पोखरापारा, स्कूलपारा, पहेतापारा और पहाड़पारा में बिजली विस्तार का कार्य होगा।

करोटी: खासपारा, इमलीडीह, पोड़ीडोल, पोरतेपारा, परसापारा और गुलरडांडपारा जैसे क्षेत्रों में रोशनी पहुँचेगी।

चोगा: मधवानीपारा, आमपारा, खासपारा और श्यामपारा के निवासियों को बिजली की सुविधा मिलेगी।

इसके साथ ही कछवारी (पांडोपारा, स्कूलपारा), खैरा (रेंडियापारा-1 व 2), नवडीहा (मेन रोड) और कछिया (नवडीहा चौक) में भी विद्युतीकरण का कार्य किया जाएगा। इन क्षेत्रों में आजादी के बाद पहली बार नियमित विद्युत सुविधा उपलब्ध कराई जाएगी। जिससे व्यापक स्तर पर ग्रामीण आबादी लाभान्वित होगी।

परियोजना के क्रियान्वयन की जिम्मेदारी सूरजपुर के कार्यपालन अभियंता को सौंपी गई है, ताकि समयबद्ध और गुणवत्तापूर्ण कार्य सुनिश्चित हो सके।

राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ‘बिहान’ से बदली तस्वीर

गृहिणी से सफल कृषक उद्यमी बनीं सदाय नेताम

रायपुर(ज्वाला एक्सप्रेस)। ग्रामीण महिलाओं को आत्मनिर्भर एवं आर्थिक रूप से सशक्त बनाने के उद्देश्य से संचालित राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन ‘बिहान’ कोंडागांव जिले में सकारात्मक बदलाव की मिसाल प्रस्तुत कर रहा है। इसी कड़ी में कोंडागांव जिले के फरसागांव विकासखंड अंतर्गत ग्राम पंचायत गट्टीपलना की निवासी श्रीमती सदाय नेताम आज एक सफल कृषक उद्यमी के रूप में अपनी पहचान बना चुकी हैं। उनकी सफलता न केवल उनके परिवार के लिए, बल्कि पूरे क्षेत्र की महिलाओं के लिए प्रेरणादायक है।

फरसागांव से लगभग 3 किलोमीटर दूर स्थित ग्राम गट्टीपलना की श्रीमती सदाय नेताम ‘शिव शक्ति स्व-सहायता समूह’ से जुड़ी हुई हैं। राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन के अंतर्गत उन्हें बैंक लिंकेज के माध्यम से 50 हजार रुपये की वित्तीय सहायता प्राप्त हुई, जिसने उनके जीवन में परिवर्तन की दिशा तय की। मिशन के तहत कार्यरत टीम एवं इंटीग्रेटेड फार्मिंग क्लस्टर के माध्यम से उन्हें आधुनिक एवं वैज्ञानिक खेती की तकनीकों का प्रशिक्षण दिया गया। मल्लिंग, डिप्ट इरिगेशन जैसी उन्नत विधियों के साथ-साथ उच्च गुणवत्ता वाले बीजों के उपयोग की जानकारी भी प्रदान की गई। इन तकनीकों को अपनाते हुए सदाय नेताम ने टमाटर, करेला एवं पॉपकॉर्न मक्का की खेती प्रारंभ की। उन्होंने अपनी कृषि गतिविधियों में कुल 1 लाख 50 हजार रुपये का निवेश किया। उनकी मेहनत, लगन और वैज्ञानिक पद्धतियों के उपयोग का परिणाम यह रहा



कि उन्हें 3 लाख 60 हजार रुपये की कुल आय प्राप्त हुई, जिससे 2 लाख 10 हजार रुपये का शुद्ध लाभ अर्जित हुआ। यह सफलता केवल आर्थिक उपलब्धि तक सीमित नहीं है, बल्कि इससे उनके आत्मविश्वास में भी उल्लेखनीय वृद्धि हुई है। वर्तमान में वे अपने गांव एवं आसपास के क्षेत्रों में कृषि सखी के रूप में कार्य करते हुए अन्य महिलाओं को आधुनिक खेती, जैविक खाद के उपयोग तथा कृषि यंत्रों के समुचित उपयोग के लिए प्रेरित कर रही हैं। प्रशिक्षण एवं वित्तीय सहायता ने उन्हें आत्मनिर्भर बनाने का मार्ग दिखाया है। आज वे अपने परिवार की आर्थिक स्थिति को सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण योगदान दे रही हैं तथा बेहतर भविष्य सुनिश्चित कर रही हैं। जिला प्रशासन एवं राष्ट्रीय ग्रामीण आजीविका मिशन की पहल से जिले में ऐसे अनेक उदाहरण सामने आ रहे हैं, जहां महिलाएं स्व-सहायता समूहों के माध्यम से संगठित होकर आर्थिक गतिविधियों में सक्रिय भागीदारी निभा रही हैं। इससे न केवल उनकी आय में वृद्धि हो रही है, बल्कि सामाजिक स्तर पर उनकी स्थिति भी सशक्त हो रही है।

शुभ कार्यों की शुरुआत, दान-पुण्य और समृद्धि का प्रतीक

अक्षय तृतीया पर श्रद्धा, परंपरा और खरीदारी का संगम

मुंगेली। भारतीय संस्कृति में अक्षय तृतीया का पर्व विशेष महत्व रखता है। यह दिन शुभ कार्यों की शुरुआत, दानपुण्य और समृद्धि का प्रतीक माना जाता है। धार्मिक मान्यता के अनुसार अक्षय तृतीया के दिन किया गया दान और शुभ कार्य अक्षय फल प्रदान करता है, अर्थात इसका फल कभी समाप्त नहीं होता। यही कारण है कि इस दिन लोग विशेष रूप से गरीबों को अन्न, वस्त्र और जल का दान करते हैं। इस शुभ अवसर पर गृह प्रवेश, विवाह और नए व्यापार की शुरुआत भी की। पुजारियों के अनुसार इस दिन बिना किसी विशेष महुर्त के भी शुभ कार्य किए जा सकते हैं। मान्यता है कि इस दिन सोना खरीदना अत्यंत शुभ होता है और इससे घर में लक्ष्मी का वास होता है। इसके अलावा बर्तन, वाहन और इलेक्ट्रॉनिक सामानों की दुकानों पर भी अच्छी खासी भीड़ देखने को मिलती है। ग्रामीण क्षेत्रों में भी अक्षय तृतीया का उत्साह



देखने लायक रहा। किसान इस दिन को खेतीकिसानी के लिए भी शुभ मानते हैं। अक्षय तृतीया का मुहुर्त पंडित संतोष कुमार पाठक ने बताया है कि अक्षय तृतीया 19/4/26 रविवार समय प्रातः 10.49 से 20/4/26 सोमवार

7,28तक पुण्य काल, उदिया तिथि 20/4/26 तक है 20/04/26 तीज और चतुर्थी एक दिन पड़ रहा है। इसलिए 19/4/26 को मनाएं, 20/4/26को 7, 28से पहले। अक्षय तृतीया पर गुड्डेगुडियाँ की शादी की परंपरा इस दिन छोटे

छोटे बच्चे बड़े उत्साह और उमंग के साथ अपने गुड्डेगुडियों का विवाह रचाते हैं। इसके लिए विधिवत मंडप तैयार किया जाता है, जिसे फूलों, रंगबिरंगी सजावट और कपड़ों से आकर्षक बनाया जाता है। शादी की सभी रस्में पूरी परंपरा

के अनुसार निभाई जाती हैं। बच्चे बारात की तैयारी करते हैं, जिसमें गुड्डे को दुल्हा बनाकर सजाधजाकर निकाला जाता है। ढोलगाइयों की जगह बच्चे खुद गानाबजाना करते हुए बारात निकालते हैं, जो देखने में बेहद मनमोहक लगता है। वहीं गुडियाँ को दुल्हन की तरह सजाकर मंडप में बैठाया जाता है और फिर हंसीखुशी के माहौल में फेरे, वरमाला और अन्य रस्में पूरी की जाती हैं। इस आयोजन में बच्चों के साथसाथ बड़े भी उत्साह से शामिल होते हैं और उनकी खुशियों में सहभागी बनते हैं। गुड्डेगुडियों की शादी केवल एक खेल नहीं, बल्कि भारतीय परंपराओं और संस्कारों को बचपन से ही सीखने का एक माध्यम भी है। इस परंपरा के जरिए बच्चे सामाजिक रीतिरिवाजों को समझते हैं और आनंद के साथ त्योहार की महत्ता को महसूस करते हैं।

महिला आरक्षण नहीं, हक का पूरा नक्शा चाहिए, मधु गुप्ता ने जातीय जनगणना को बताया असली कुंजी

850 सीटें,तब मिलेगा न्याय?, महिला आरक्षण पर कांग्रेस, नेता का बड़ा बयान

रामानुजगंज। महिला आरक्षण विधेयक पर राजनीतिक बहस के बीच लोक कांग्रेस अध्यक्ष एवं पूर्व नगर पंचायत अध्यक्ष मधु गुप्ता ने स्पष्ट रुख रखा है। उनका कहना है कि केवल आरक्षण की घोषणा पर्याप्त नहीं,बल्कि वास्तविक प्रतिनिधित्व सुनिश्चित करने के लिए जातिगत जनगणना अनिवार्य है। मधु गुप्ता ने कहा कि देश में महिला आरक्षण की अवधारणा कांग्रेस शासनकाल में सामने आई थी,लेकिन समय के साथ इसे लागू करने की प्रक्रिया जटिल होती गई। उन्होंने वर्तमान परिप्रेक्ष्य में सवाल उठाते हुए कहा कि जब तक समाज के विभिन्न वर्गों की वास्तविक संख्या सामने नहीं आएगी,तब तक आरक्षण का लाभ संतुलित तरीके से नहीं पहुंच सकता। उन्होंने 2029 तक महिला आरक्षण लागू करने की आवश्यकता पर जोर देते हुए कहा कि इसके लिए लोकसभा सीटों की



संख्या बढ़ाना जरूरी होगा। उनका तर्क है कि यदि सीटों को बढ़ाकर लगभग 850 किया जाता है और इसके लिए परिसीमन आयोग गठित किया जाता है,तभी सभी वर्गों की खासकर महिलाओं और पिछड़े समुदायों को समुचित प्रतिनिधित्व मिल सकेगा। मधु गुप्ता ने यह भी कहा कि पुराने आंकड़ों के आधार पर नई व्यवस्था लागू करना जल्दबाजी होगी। उन्होंने सवाल उठाया कि

सरकार जातिगत जनगणना से क्यों बच रही है,जबकि यही प्रक्रिया समाज की वास्तविक संरचना को सामने लाएगी। ओबीसी वर्ग को लेकर उन्होंने विशेष चिंता जताई। उनका कहना है कि यह वर्ग बड़ी आबादी का प्रतिनिधित्व करता है,लेकिन नीति निर्माण में इसकी हिस्सेदारी स्पष्ट नहीं है। -जब तक आंकड़े सामने नहीं आएंगे,तब तक हक की बात अधूरी रहेगी,- उन्होंने कहा। मध्य गुप्ता ने आरोप लगाया कि वर्तमान विधेयक में ओबीसी वर्ग की हिस्सेदारी स्पष्ट किए बिना आगे बढ़ने की कोशिश की जा रही है,जो लंबे समय में प्रतिनिधित्व के सवाल को और जटिल बना सकती है।

पाहंदा (अ) पंचायत में निर्माण कार्यों पर सवाल, पूर्व आवेदन पर कार्रवाई नहीं—अब RTI के तहत मांगी जानकारी

पाटन । जनपद पंचायत पाटन अंतर्गत ग्राम पंचायत पाहंदा (अ) में वर्ष 202425 से जनवरी 2026 तक कराए गए विभिन्न निर्माण कार्यों एवं मदों में अनियमितताओं को लेकर एक बार फिर मामला गरमा गया है। गौरतलब है कि इस संबंध में कुलेश्वर निर्मलकर द्वारा 23 मार्च 2026 को मुख्य कार्यपालन अधिकारी, जनपद पंचायत पाटन को लिखित आवेदन देकर निर्माण कार्यों, स्वीकृत राशि एवं भुगतान प्रक्रिया व सरपंच पति व परिवार को की गई भुगतान की जांच की मांग की गई थी। आवेदन में आरोप लगाया गया था कि कुछ कार्यों में बिना स्वीकृति, बिना मूल्यांकन एवं बिना प्रस्ताव के ही दो दो बार भुगतान किया गया है, जो गंभीर वित्तीय अनियमितता की श्रेणी में आता है। हालांकि, उक्त लिखित आवेदन पर अब तक किसी प्रकार की ठोस कार्रवाई नहीं होने से प्रशासनिक कार्यप्रणाली पर सवाल



उठ रहे हैं। न तो जांच की स्थिति स्पष्ट की गई है और न ही संबंधित जिम्मेदारों के विरुद्ध कोई कदम सामने आया है। इसी परिप्रेक्ष्य में अब आवेदक सुरेंद्र साहू द्वारा सूचना का अधिकार अधिनियम, 2005 के तहत आवेदन प्रस्तुत कर पूरे मामले की विस्तृत जानकारी मांगी गई है। RTI आवेदन के माध्यम से जांच अधिकारी की नियुक्ति, अब तक की प्रगति, निष्कर्ष, एवं प्रस्तावित कार्रवाई की जानकारी मांगी गई है। साथ ही यह भी पूछा गया है कि संबंधित तत्कालीन सचिव एवं सरपंच से स्पष्टीकरण लिया गया है या नहीं। यदि जांच पूर्ण हो चुकी है

तो उसकी प्रमाणित प्रति उपलब्ध कराने तथा जांच लंबित होने की स्थिति में वर्तमान स्थिति (स्टेटस रिपोर्ट) देने की मांग की गई है। स्थानीय स्तर पर यह मामला चर्चा का विषय बना हुआ है, वहीं आम नागरिकों में यह सवाल उठ रहा है कि आखिर पूर्व में दिए गए आवेदन पर अब तक कार्रवाई क्यों नहीं की गई। प्रकरण में जनसूचना अधिकारी, जनपद पंचायत पाटन से नियमानुसार शीघ्र जानकारी उपलब्ध कराने एवं मामले की निष्पक्ष जांच कर दोषियों के विरुद्ध सतत कार्रवाई की मांग की गई है।

अक्षय तृतीया पर भक्ति,परंपरा और उत्साह: परशुराम जन्मोत्सव में सजी आस्था की झांकी शोभायात्रा में उमड़ा जनसैलाब

रामानुजगंज । अक्षय तृतीया के पावन अवसर पर नगर में ब्रह्मण समाज ने भगवान परशुराम का जन्मोत्सव पूरे श्रद्धा,उत्साह और गरिमा के साथ मनाया। सुबह शिव मंदिर में विधिवत पूजाअर्चना के साथ कार्यक्रम की शुरुआत हुई,जहां बड़ी संख्या में श्रद्धालु जुटे और समाज की सुखसमृद्धि व शांति की कामना की गई। पूजा के बाद नगर में भव्य शोभायात्रा निकाली गई। भगवान परशुराम की आकर्षक झांकी के साथ ब्रह्मलु पारंपरिक वेशभूषा में भक्ति गीतों और जयघोषों के बीच आगे बढ़े। शोभायात्रा नगर के प्रमुख मार्गों से गुजरी, जहां नागरिकों ने जमहलजगह पुष्पवर्षा कर स्वागत किया। पूरे आयोजन के दौरान अनुशासन और व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान रखा गया, वहीं श्रद्धालुओं के लिए पानी और प्रसाद की भी व्यापक व्यवस्था की गई। शोभायात्रा पुनःशिव मंदिर प्रांगण



पहुंची,जहां सामाजिक संवाद का दौर चला। वक्ताओं ने समाज में आपसी सौहार्द और मजबूत संबंध बनाए रखने पर जोर दिया। इस अवसर पर, सेवानिवृत्ति शासकीय सेवकों मे योगेंद्र ओझा, विजय नाथ चौबे, लाल बिहारी चौबे,उमाशंकर चौबे और सतनारायण तिवारी का माल्यार्पण, शाल और श्रीफल भेंट कर सम्मान किया गया। कार्यक्रम का समापन सामूहिक भंडारे के साथ हुआ। आयोजन में मधुसूदन चौबे, पारस पांडे, डॉ.गोरखनाथ

पांडे,विपिन पाठक, दिनेश चौबे, ऋषि द्विवेदी, श्याम कुशल पांडे, अरविंद दुबे, मनोज दुबे, अनुपम पांडे, विकास दुबे, अनिल पांडे, राजा तिवारी, जय चौबे, दिवाकर द्विवेदी, विनय पांडे, रमेश मिश्रा, विष्णु पांडे, उज्ज्वल तिवारी,वेद प्रकाश तिवारी, निशंत चौबे, दामोदर मिश्र, रितेश पांडे,आनंद मिश्रा, सूरज मिश्रा, संतोष पांडे, आशु चौबे, दीपक दुबे, आनंद चौबे, बिट्टू चौबे, अर्पित तिवारी, सूर्यमणि पांडे सहित बड़ी संख्या में समाजजन मौजूद रहे।

ऑंगन बाड़ी कार्यकर्ता संघ ने बिलासपुर के जिला परियोजना–कार्यक्रम अधिकारी से बेलगहना सेक्टर के सुपरवाईजर के भ्रष्टाचार की शिकायत की

संघ की जिलाध्यक्ष सहित पदाधिकारियों ने की शिकायत

कोटा। बिलासपुर जिला जिलाध्यक्ष जुझारू आंगनबाड़ी कार्यकर्ता सहायिका कल्याण संघ के बैनर तले संघ की जिला अध्यक्ष मंजू कोमल मेश्राम और संघ के पदाधिकारियों ने बेलगहना सेक्टर के पर्यवेक्षक किर्ति किरण मोगरे के भ्रष्टाचार एवं दुर्व्यवहार से संबंधित शिकायत बिलासपुर जिला परियोजना एवम कार्यक्रम अधिकारी से की, और उचित एवम निष्पक्ष कार्यवाई की मांग की है। अपने शिकायत आबेदान में उन्होंने अधिकारियों से निवेदन किया है कि बेलगहना सेक्टर सुपरवाइजर किर्ति किरण मोगरे के द्वारा बेलगहना सेक्टर में पैसों की मांग लगभग सभी कार्यों के लिए की जाती है तथा नहीं देने पर कार्यकर्ताओं को प्रताड़ित किया जाना एवं उनके परिजनों से



गाली गलौज एवं बदतमीजी किये जाने की गंभीर शिकायत काफी समय से प्राप्त होती रही है इसके विस्तृत विवरण के लिए शिकायत की तिथि साथ में संलग्न है। महेदय इनके द्वारा बेलगहना सेक्टर में सहपर्यवेक्षक के

रूप में एक कार्यकर्ता जिनका नाम ललिता यादव है को रखा गया है उनको इन्होंने अपनी आईडी दी हुई है उसके द्वारा इनका समस्त लेनदेन किया जाता है तथा उसी के द्वारा अपना समस्त कार्य (शासकीय कार्य भी) कराया जाता है और कार्यकर्ताओं को प्रताड़ित भी किया जाता है। महेदय इस प्रकार से अपना असिस्टेंट रखना शासकीय सेवा नियमावली के एकदम विरुद्ध है गैर कानूनी है और इन सभी के साक्ष्य उपलब्ध हैं और संलग्न हैं। कीर्ति किरण मोगरे के द्वारा पूर्व में भी भ्रष्टाचार किया गया था जब वह चपरा सेक्टर में पदस्थ थी उस समय

उन्होंने महतारी वंदन योजना में दो मृत व्यक्तियों का नाम शामिल कर दिया था इस कारण उन्हें पहले भी हटाय़ा जा चुका है लेकिन उनके आचरण में कोई सुधार नहीं हुआ है उन्हे उनके द्वारा किए गए भ्रष्टाचार में जुड़ि हुई है। महेदय वर्तमान में जो शिकायत प्राप्त हुई है वह बहुत ही गंभीर है और अपमानजनक है अतः इस संबंध में निवेदन है कि उन पर कठोर कार्यवाही की जाए और शीघ्र ही उन्हें वहां से हटाकर, तब जांच की जाए, जिससे जांच निष्पक्ष हो सके अन्यथा उनके द्वारा जांच को प्रभावित करने के लिए अन्य कार्यकर्ताओं को भी भयभीत कर प्रभावित किया जाएगा। अतः उपरोक्त सभी संबंधों में महेदय से अपेक्षा है कि शीघ्र ही कड़ी से कड़ी कार्यवाही करें और ऐसा नहीं होने पर

हमारा छपीसगढ़ जुझारू आंगनवाड़ी कार्यकर्ता सहायिका कल्याण संघ उग्र आंदोलन करने के लिए बाध्य होगा। जिला अध्यक्ष के द्वारा उक्त शिकायत पत्र के माध्यम से अधिकारियों को अपने विरोध,निवेदन से अवगत कराते हुए स्पष्ट किया गया है कि इस मामले में लीपापोती न कि जाए निष्पक्ष जांच की जाए और जांच के पहले वहां से सुपरवाइजर को बाहर भेजा जाय [योंकि उनके द्वारा लगातार कार्यकर्ता पर दबाव व भय का वातावरण निर्मित की जा रहा है जो उचित नहीं है। यदि उचित निष्पक्ष जांच न करके सुपरवाइजर को बचाने की कोशिश की जाती है तो संघ आंदोलन का मार्ग अपनाएगा जिसकी सारी जिम्मेदार संबंधित अधिकारियों की होगी।

किसान का आरोप शासकीय भूमि पर अवैध मिट्टी उत्खनन से खेत को भारी नुकसान, कार्रवाई की मांग

अम्लेश्वर पाटन। नगर पालिका परिषद अलिेश्वर क्षेत्र अंतर्गत ग्राम मगरघटा, जिला दुर्ग के निवासी शिरीष चंद्र अग्रवाल किसान ने जिला प्रशासन को दिए आवेदन में आरोप लगाया है कि उनके खसरा क्रमांक 485 स्थित खेत के आसपास शासकीय भूमि पर बने बरसाती नालों से अवैध रूप से मिट्टी निकाली जा रही है, जिससे उनके खेत के आवागमन मार्ग में बाधा उत्पन्न हो रही है और खेत को गंभीर नुकसान पहुंचाया जा रहा है। शिकायतकर्ता के अनुसार, इस पूरे मामले में विमल अग्रवाल (मल्टी स्पेक्टर्स सिटी) तथा उनके मैनेजर दिलीप मिश्रा की भूमिका सामने आई है। आरोप है कि बीते 34 वर्षों से लगातार नाले के किनारों से छेड़छाड़ कर खेत तक पहुंचने के रास्ते को प्रभावित किया जा रहा है तथा खेत की सुखा हेतु बनाए गए बांध को भी तोड़ा गया है। किसान ने बताया कि

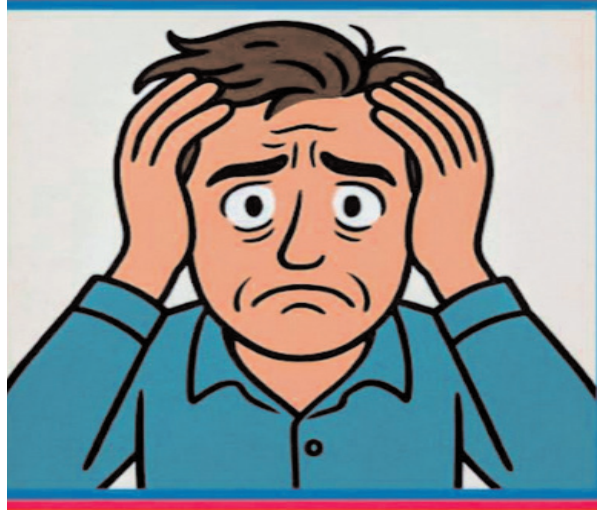


इस कृत्य से उसकी खेती प्रभावित हो रही है और उसे आर्थिक नुकसान उठाना पड़ रहा है। उन्होंने संबंधित व्यक्तियों के खिलाफ भारतीय न्याय संहिता की धाराओं 303, 324, 326, 270, 329 सहित पर्यावरण संरक्षण अधिनियम एवं जल (प्रदूषण निवारण एवं नियंत्रण) अधिनियम के तहत प्रकरण दर्ज कर

सतत कानूनी कार्रवाई की मांग की है। साथ ही, किसान ने प्रशासन से नाले के किनारों पर पक्की दीवार निर्माण कराने एवं हुए नुकसान की भरपाई करने की मांग की है। किसान ने चेतावनी दी है कि यदि जल्द कार्रवाई नहीं की गई, तो वे उच्च अधिकारियों के समक्ष शिकायत दर्ज कराने को बाध्य

होंगे। वहीं मगरघटा के निवासी मनोज यादव और ग्रामीणों का कहना है कि 484 खसरा नंबर की खोदाई की है जिसका पटवारी के द्वारा निरीक्षण भी किया गया साथ ही गांव देवता भैंसासुर के आस पास के जमीन को भी नुकसान पहुंचा है।जिसकी शिकायत जिला प्रशासन से की गई है।

रामानुजगंज। सरगुजा संभाग में सामने आए एक ऑडियो विवाद ने नगरीय प्रशासन की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं। ऑडियो में कार्यकर्ताओं के लिए आपर्पितजनक भाषा का इस्तेमाल सुनाई देने के बाद कार्रवाई हुई और बलरामपुर नगर पालिका परिषद के मुख्य नगर पालिका अधिकारी किरण राय को पदावतन कर नगर पंचायत स्तर पर भेज दिया गया। नगरीय प्रशासन एवं विकास विभाग ने आदेश जारी करते हुए प्रणव राय को रायगढ़ जिले के तमनार नगर पंचायत में मुख्य नगर पंचायत अधिकारी के रूप में पदस्थ किया है। वहीं बलरामपुर नगर पालिका परिषद की जिम्मेदारी अब दीपक एक्का को सौंपी गई है। यह फैसला ऑडियो सामने आने के बाद प्रशासनिक स्तर पर बड़े दबाव के बीच लिया गया।



वायरल ऑडियो ने बढ़ाया विवाद

वायरल ऑडियो में संबंधित अधिकारी कार्यकर्ताओं के लिए अशोभनीय और भेदनाकामक करते सुनाई दे रहे हैं। इतना ही

नहीं,बातचीत में रिकॉर्डिंग सुनाने तक की बात कही गई। ऑडियो सामने आने के बाद मामला तेजी से तूल पकड़ गया और प्रशासन को कार्रवाई करनी पड़ी। हालांकि ऑडियो की आधिकारिक पुष्टि जांच का विषय बनी हुई है।

सार्वजनिक स्थान पर आत्महत्या से मचा हड़कंप, पुलिस की सुस्ती पर उठे सवाल

6 घंटे तक पेड़ पर लटका रहा शव, कांग्रेस नेताओं ने साँपा ज्ञापन



भिलाई। शहर के सेक्टर4, सड़क 36 में 12 अप्रैल (रविवार) सुबह एक दर्दनाक घटना सामने आई, जहां अजय प्रजापति (उम्र 36 वर्ष) ने सार्वजनिक स्थान पर फांसी लगाकर आत्महत्या कर ली। यह घटना सुबह लगभग 4 बजे की बताई जा रही है। स्थानीय लोगों के अनुसार, घटना की सूचना संबंधित थाना पुलिस को समय पर दे दी गई थी, इसके बावजूद सुबह 10 बजे तक शव पेड़ पर लटका रहा। इस स्थिति ने पुलिस की कार्यप्रणाली पर गंभीर सवाल खड़े कर दिए हैं।

जोन5 अध्यक्ष राजेश चौधरी ने कांग्रेस कार्यकर्ताओं के साथ अतिरिक्त पुलिस अधीक्षक (शहर) को ज्ञापन साँपा। ज्ञापन में मांग की गई कि : पुलिस सामाजिक संवेदनशील मामलों में तत्काल कार्रवाई सुनिश्चित करे। ऐसी घटनाओं से समाज में डर और मिश्र, फतेह सिंह, देवेन्द्र उक्के, लोकेश, निउभ सिंह सहित अन्य कार्यकर्ता शामिल रहे।

समाज में भय और असहजता का माहौल-घटना के बाद क्षेत्र में भय, असहजता और मानसिक दबाव का माहौल देखा गया। लोगों का कहना है कि इस तरह की घटनाएं समाज पर नकारात्मक प्रभाव डालती हैं और संवेदनशील मामलों में प्रशासन की तत्परता आवश्यक है। वहीं, कुछ युवाओं द्वारा मौके पर सोशल मीडिया (इंस्टाग्राम और फेसबुक) के लिए रील बनाते भी देखा गया, जिसे लेकर भी लोगों में नाराजगी जताई गई। कांग्रेस नेताओं ने उठाई आवाज-मामले को गंभीरता से लेते हुए लोक कांग्रेस कमेटी3 के अध्यक्ष सौरभ मिश्रा और

प्रशासन से जवाबदेही की मांग-कांग्रेस नेताओं ने स्पष्ट किया कि पुलिस को केवल अपराध नियंत्रण ही नहीं, बल्कि सामाजिक संवेदनशीलता से जुड़े मामलों में भी सक्रिय भूमिका निभानी चाहिए, ताकि भविष्य में ऐसी घटनाओं के बाद अव्यवस्था और भय का माहौल न बने।



रायपुर। परशुराम सेवा मंडल गुडियारी पड़ाव द्वारा भगवान परशुराम जी की महाआरती किया गया एवं भव्य भंडारा का आयोजन किया गया।

संक्षिप्त समाचार

बुजुर्ग महिला हत्याकांड की गुथी सुलझी, रिश्तेदार निकले कातिल

रायपुर। बलरामपुर-रामानुजगंज जिले के ग्राम सिधमा में जमीन विवाद को लेकर रिश्तेदारों ने वृद्धा पर जानलेवा हमला किया। इलाज के दौरान वृद्धा की मौत हो गई. पुलिस ने वारदात में शामिल आधा दर्जन रिश्तेदारों को गिरफ्तार किया है. सभी जेल दाखिल कर दिए गए हैं. पूरा मामला बरियो पुलिस चौकी का है. जानकारी के अनुसार, बरियो पुलिस चौकी में प्राथी कुलन रिपोर्ट दर्ज कराई गई थी कि 15 अप्रैल को बेटा और बहू के साथ घर के समीप बाड़ी में लगाए मृंगफत्ती फसल से घास निकालने गए थे जबकि पत्नी राजी बाई और नतनी पायल घर में थी. शाम 5 बजे नतनी पायल दोड़कर आई और बताया की दादी के साथ मारपीट कर रहे हैं, जिस पर कुलन तत्काल बेटा और बहू के साथ घर पहुंचे तो देखा संजय, उसकी पत्नी परमेश्वरी उर्फ पनेसेरी, सरस्वती उर्फ बुधो, राजकुमारी उर्फ जुईया, उसका पति चैतू और फुलकुंवर सभी लोग जमीन हिस्सा बंटवारा को लेकर मारपीट कर रहे थे. परिजन ने बीच बचाव किया तो सभी मौके से फ्फार हो गए, 16 अप्रैल को जब परिजन भतीजा के फ्लदान कार्यक्रम में गए थे. तभी बेटा अमृत ने बताया कि मां की तबीयत ज्यादा खराब हो गई. जब तक परिजन घर पहुंचे तब तक वृद्धा की मौत हो चुकी थी. पुलिस ने मर्ग कायम करने के पश्चात जांच शुरू की. मर्ग जांच उपरांत पुलिस ने आरोपियों के विरूद्ध हत्या का मामला दर्ज किया. पुलिस ने घटना में शामिल ग्राम सिधमा निवासी संजय मानिकपुरी आ. रामभरोस मानिकपुरी (31 वर्ष), परमेश्वरी उर्फपनेसेरी पति संजय मानिकपुरी (28 वर्ष), भेलवाडीह निवासी सरस्वती उर्फबुधो पति सिसाराम उम्र (40 वर्ष), रजपुरी निवासी राजकुमारी उर्फ जुईया पति चैतू मानिकपुरी (45 वर्ष), चैतू मानिकपुरी आ.स्व. सुधीर मानिकपुरी (45 वर्ष) और ग्राम कोट गहना निवासी फुलकुंवर पति मोहन मानिकपुरी (50 वर्ष) को गिरफ्तार किया. पुलिस ने सभी आरोपियों को न्यायालय पेश किया जहां से सभी को जेल भेज दिया गया है.

खारून नदी ब्रीज में हाइवा की टक्कर से बाइक सवार युवक की मौत

रायपुर। खारून नदी ब्रिज पर मेंटेनेंस के काम के बाद इसे गुरुवार की रात को खोला गया था, लेकिन दो दिन बाद ही शनिवार दोपहर में खारून नदी ब्रिज पर बड़ा सड़क हादसा हो गया। खारून नदी ब्रिज के ऊपर तेज रफ्तार ट्रक ने बाइक सवार को टक्कर मार दी। हादसा इतना भयानक था कि बाइक सवार ट्रक के पहिए के नीचे आ गया और उसकी मौके पर ही मौत हो गई। यह हादसा दोपहर करीब 1 बजे खारून नदी ब्रिज पर दुर्ग से रायपुर जाने वाले मार्ग पर हुआ है। एक काले रंग की पल्सर बाइक ब्रिज पर जा रही थी। तभी पीछे से आ रहे एक हाईवा ट्रक ने जोरदार टक्कर मार दी। प्रत्यक्षदर्शियों के अनुसार, ट्रक ड्राइवर तेज रफ्तार में था और लापरवाही से चला रहा था। टक्कर लगते ही बाइक सवार सड़क पर गिर गया और ट्रक के पहिये के नीचे आ गया। इससे उसकी मौके पर ही मौत हो गई। हादसा इतना अचानक हुआ कि आसपास मौजूद लोग कुछ समझ ही नहीं पाए। घटना के बाद पुलिस ने तुरंत मौके पर पहुंचकर मार्ग को खाली करवाया। पुलिस ने मृतक की जेब की तलाशी ली, जिसमें मिले पहचान पत्र से उसका नाम आरिफरजा मंसूरी पता चला। इसके बाद पुलिस ने शव को अपने कब्जे में लेकर शासकीय वाहन से सुरेला अस्पताल पहुंचाया, जहां उसे मॉर्च्युरी में रखवाया गया।

आरटीई को लेकर आर-पार, छत्तीसगढ़ में 5000 निजी स्कूल बंद, संकट में 15000 बच्चों का भविष्य

रायपुर। छत्तीसगढ़ में आरटीई की प्रतिपूर्ति की राशि सरकारी स्कूलों पर आने वाले खर्च के बराबर करने की मांग को लेकर प्रदेश के निजी स्कूलों पर ताला लटका मिला है। वहीं प्राइवेट स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन का कहना है कि प्रदेश में आज करीब 5000 स्कूल बंद रहे। आरटीई पर सरकार की सख्ती के बाद से प्राइवेट स्कूल मैनेजमेंट आंदोलनरत है। आंदोलन की अगली कड़ी में प्रदेश के करीब 8000 प्राइवेट स्कूल शिक्षा मंत्री को चिट्ठी लिखकर प्रतिपूर्ति की राशि बढ़ाने की मांग करेंगे। प्रदेश में आरटीई को लेकर सरकार ने पहली लिस्ट जारी कर दी है। करीब 14,000 बच्चों को इसके तहत प्राइवेट स्कूलों में दाखिला दिया जाएगा। लिस्ट में शामिल बच्चों के अभिभावक सरकार और निजी स्कूलों की लड़ाई में परेशान हैं। उन्हें इस बात की चिंता सता रही है कि लिस्ट जारी होने के बाद उनके बच्चों का दाखिला स्कूलों में होगा या नहीं। प्रदेश की साय सरकार आरटीई के तहत दाखिला लेने वाले प्रत्येक विद्यार्थी के बदले में 7000 रुपए फीस देती है, जबकि स्कूल मैनेजमेंट एसोसिएशन का कहना है कि आरटीई के प्रावधानों के तहत यह राशि 22,000 होनी चाहिए। एसोसिएशन के अध्यक्ष राजीव गुप्ता का कहना है कि आरटीई में सरकारी स्कूलों में प्रति छात्र आने वाले खर्च के बराबर प्राइवेट स्कूलों को प्रतिपूर्ति देने का नियम है। उनका निहम है कि यह राशि मिलने तक आंदोलन जारी रहेगा। वहीं दूसरी तरफसरकार ने आदेश जारी कर रखा है कि आरटीई को लेकर जिन स्कूलों ने गरीब बच्चों की एडमिशन देने में टालमटोल की, उनकी मान्यता खतरे में पड़ सकती है।

अगले एक वर्ष में पेयजल समस्याओं के स्थायी समाधान के निर्देश

अवैध प्लॉटिंग और अवैध निर्माण पर कड़ाई बरतने को कहा

■ शहरों में पेयजल आपूर्ति, अवैध प्लॉटिंग और अवैध निर्माण पर उप मुख्यमंत्री श्री अरुण साव सख्त

■ उप मुख्यमंत्री श्री साव ने दिनभर चली बैठक में नगर निगमों और नगरपालिकाओं के कार्यों की समीक्षा की

रायपुर/ संवाददाता
उप मुख्यमंत्री तथा नगरीय प्रशासन एवं विकास मंत्री श्री अरुण साव ने आज प्रदेश के सभी नगर निगमों और नगर पालिकाओं के कार्यों की समीक्षा की। उन्होंने रायपुर के सिविल लाइन स्थित सर्किट हाउस में दिनभर चली बैठक में शहरों में पेयजल आपूर्ति की समस्याओं, अवैध प्लॉटिंग और अवैध निर्माण पर नाराजगी

भेलवापाल में किसानों को मिला समग्र कृषि ज्ञान.....

रायपुर। संवाददाता
जिले के ग्राम भेलवापाल में 18 अप्रैल 2026 को एक दिवसीय कृषक प्रशिक्षण कार्यक्रम का सफल आयोजन किया गया। कार्यक्रम में क्षेत्र के 50 से 55 किसानों ने उत्साहपूर्वक भाग लेकर आधुनिक, लाभकारी एवं टिकाऊ खेती से जुड़ी उन्नत तकनीकों की जानकारी प्राप्त की। प्रशिक्षण का मुख्य उद्देश्य किसानों को प्राकृतिक खेती, मृदा संरक्षण तथा सब्जी उत्पादन के वैज्ञानिक तरीकों से जोड़कर उनकी आय बढ़ाने और खेती को दीर्घकालिक रूप से सुरक्षित बनाना रहा।कार्यक्रम के दौरान कृषि विज्ञान केंद्र के कीट वैज्ञानिक एवं प्राकृतिक खेती प्रभारी डॉ. योगेश कुमार सिदार ने रासायनिक खेती से होने वाले दुष्प्रभावों पर विस्तार से चर्चा की। उन्होंने किसानों को बताया कि निरंतर रासायनिक उर्वरक व कीटनाशकों के उपयोग से मिट्टी की उर्वरता घटती है, लागत बढ़ती है और मानव स्वास्थ्य पर भी नकारात्मक असर

नगर निगम में भ्रष्टाचार की जांच शुरू,चार अफसर निलंबित हुए..

रायपुर/ संवाददाता
नगर निगम में करोड़ों के घोटाले के मामले में 4 अधिकारियों को निलंबित किया गया है। आयुक्त ने विभागीय और कानूनी जांच के आदेश दिए हैं। नगर निगम में सामने आए 100 करोड़ से अधिक के कथित भ्रष्टाचार मामले ने प्रशासनिक व्यवस्था को हिला कर रख दिया है। इस पूरे प्रकरण में एक उच्चस्तरिय जांच रिपोर्ट के आधार पर की गई है, जिसमें गंभीर अनियमितताओं और नियमों की अनेदखी सामने आई है। नगर निगम आयुक्त विश्वदीप ने जानकारी देते हुए बताया कि जून क्रमांक 10 से जुड़े मामले में तत्कालीन जोन कमिश्नर विवेकानंद दुबे, कार्यपालन अभियंता आशीष शुक्ला, इंजीनियर योगेश यादव और अजय श्रीवास्तव को निलंबित किया गया है। इनके खिलाफ विभागीय जांच भी शुरू कर दी गई है। साथ ही वेतन वृद्धि पर रोक और कानूनी कार्रवाई की प्रक्रिया भी जारी रहेगी। जांच में सामने आया है कि करीब 150 से 159 एकड़ अवैध जमीन को नियमों के खिलाफ जाकर वैध करने की कोशिश की गई। इस पूरी प्रक्रिया में नगर निगम मुख्यालय को दरकिनार किया गया। संरचना अनुमति और टाउन एंड कंट्री प्लानिंग अपरूवल में गंभीर गड़बड़ियां पाई गईं। जांच समिति ने अपनी रिपोर्ट में उल्लेख किया कि कई बार मूल दस्तावेज (नस्ती) मांगे जाने के बावजूद उपलब्ध नहीं कराए गए। 70 से अधिक खसरा नंबरों से जुड़ी फ़ाइलें गायब बताई जा रही हैं। यह अपने आप में पूरे मामले को और संदिग्ध

सर्वब्राम्हण समाज के परशुराम जयंती समारोह में पहुंचे उद्योग मंत्री

ब्राम्हण समाज हर वर्ग व समाज के कल्याण के लिये कार्य करता है-मंत्री लखनलाल देवांगन....

रायपुर/ संवाददाता
प्रदेश के उद्योग, श्रम, आबकारी व सार्वजनिक उपक्रम मंत्री श्री लखनलाल देवांगन एवं महापीर श्रीमती संजुदेवी राजपूत आज कोरबा में परशुराम द्विज परिवार व सर्वब्राम्हण समाज द्वारा आयोजित भगवान परशुराम जयंती समारोह में पहुंचे, दोनों समाज के नवनिर्मित भवनों का लोकार्पण किया तथा समाज के लोगों की मांग पर अनेकों सौगात प्रदान की, उन्होने भगवान परशुराम जी की जयंती की अपनी हार्दिक शुभकामनायें व बधाई समाज के लोगों को दी तथा उनके आशीर्वाद की कामना की। इस मौके पर सभापति श्री नूतन सिंह ठाकुर व पार्षद नरेन्द्र देवांगन सहित जनप्रतिनिधियन व समाज के लोग



उपस्थित थे। आज परशुराम जयंती के अवसर पर परशुराम द्विज परिवार व सर्वब्राम्हण समाज कोरबा के द्वारा अपने- अपने भवनों में परशुराम जयंती समारोह का आयोजन किया गया। उद्योग मंत्री श्री लखनलाल देवांगन व महापीर श्रीमती संजुदेवी राजपूत ने समारोह में पहुंचकर भगवान श्री परशुराम जी का



सक्रियता व गंभीरता से काम करने को कहा। उन्होंने कहा कि नगर निगम ऐसा काम करें जिससे राज्य की नगर पालिकाएं प्रेरणा ले सकें और नगर पालिका इस तरह से काम करें जिनसे नगर पंचायतें प्रेरित हो सकें। उन्होंने निकायों के अभियंताओं से कहा कि काम की गुणवत्ता को लेकर शिकायतें नहीं आना चाहिए। सभी निर्माण कार्य समय-सीमा में पूर्ण हों, इस पर विशेष ध्यान दें। उप मुख्यमंत्री श्री साव ने पेयजल

विद्यार्थियों ने पक्षियों के लिए बनाए घोंसले, संवेदनशील शिक्षा का दिया संदेश

रायपुर। शिक्षा केवल पुस्तकीय ज्ञान तक सीमित नहीं होती, बल्कि उसमें पर्यावरण के प्रति जिम्मेदारी और जीव-जंतुओं के प्रति संवेदनशीलता का समावेश भी आवश्यक है। इसी सोच को साकार करते हुए जिला प्रशासन के मार्गदर्शन एवं प्रोत्साहन में सारागढ़ हायर सेकेंडरी स्कूल के विद्यार्थियों ने एक प्रेरणादायक पहल की है।विद्यालय में आयोजित समर कैम्प के दौरान कक्षा 12वीं की छात्राओं—छाया, साक्षी और टीना ने मिलकर पक्षियों के लिए सुरक्षित एवं आकर्षक घोंसलों का निर्माण किया। इन घोंसलों को रचनात्मक ढंग से तैयार कर विद्यालय परिसर के पेड़ों पर स्थापित किया गया, जिससे भीषण गर्मी में पक्षियों को आश्रय और सुरक्षा मिल सके।

मॉल की पार्किंग से गायब हुई 9 लाख की इनोवा सीसीटीवी ट्रैकिंग से खुला खेल

रायपुर। सिटी सेंटर मॉल की पार्किंग में खड़ी इनोवा कार अचानक गायब हुई तो मामला चोरी नहीं बल्कि अंदरखाने गबन का निकला और पुलिस ने महज कुछ ही समय में शांति आरोपी को कार समेत धर दबोच लिया, 18 अप्रैल 2026 को सम्बलपुर निवासी प्रार्थी सुरजीत सिंह चावला अपने परिवार के साथ मॉल घूमने आए थे, पार्किंग टिकट लेकर बेटे ने वाहन की चाबी कर्मचारी को सौंपी और महज 30 मिनट बाद लौटने पर गाड़ी गायब मिली, पृष्ठताछ में खुलासा हुआ कि मॉल का कर्मचारी मनीष साहू उर्फ डेकेश्वर साहू ही इनोवा कार क्रमांक ओडी 15 ए 5089 लेकर फार हो गया है, कार में पर्स, दस्तावेज और 15 हजार रुपये नगद भी थे, घटना सामने आते ही थाना देवेन्द्र नगर में धारा 316(2) बीएनएस के तहत अपराध दर्ज हुआ और पुलिस उपायुक्त क्राइम एवं साइबर स्मृतिक राजनाला तथा मध्य जोन डीसीपी उमेश प्रसाद गुप्ता ने इसे गंभीरता से लेते हुए तत्काल कार्रवाई के निर्देश दिए, एंटी क्राइम और साइबर यूनिट के साथ थाना देवेन्द्र नगर की टीम एक्टिव हुई, मॉल और आसपास के सीसीटीवी फुटेज खंगाले गए, आरोपी के भागने के रूट को एक-एक प्रेम में ट्रैक किया गया, तकनीकी विश्लेषण और मुखबिर तंत्र को सक्रिय कर संभावित ठिकानों पर दबिश दी गई।

और ड्रेनेज की सफाई के काम पूर्ण करने के साथ ही बरसात में जल भराव रोकने जरूरी उपाय करने को कहा। जून के पहले सप्ताह में राज्य स्तरीय टीम नगर निगमों में इसका भौतिक निरीक्षण करेंगी। कार्य संतोषजनक न मिलने पर स्वास्थ्य अधिकारी और इंजीनियर पर कार्रवाई की जाएगी। श्री साव ने बैठक में प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) के अंतर्गत अपूर्ण आवासों को सितम्बर-2026 तक पूर्ण करने के निर्देश दिए। उन्होंने अप्रारंभ आवासों के निर्माण एक माह के भीतर हर हाल में शुरू करने के साथ ही मार्च-2026 में स्वीकृत सभी आवासों को वर्षा ऋतु के पहले प्रारंभ करने को कहा। उन्होंने प्रधानमंत्री आवास योजना (शहरी) 2.0 के तहत निर्धारित 18 माह की अवधि में निर्माण पूर्ण करने वाले हितग्राहियों के प्रस्ताव अविलंब विभाग को भेजने के निर्देश दिए, ताकि ऐसे हितग्राहियों को मुख्यमंत्री गृह प्रवेश सम्मान योजना की 32 हजार 850 रुपए की अतिरिक्त राशि प्रदान की जा सके। श्री साव ने पीएम स्वनिधि योजना का लाभ ज्यादा से ज्यादा स्ट्रीट वेंडर्स को दिलाने बैंकों से बात कर ऋा स्वीकृत कराने के निर्देश दिए।

महिलाओं के साथ किए गए इस

महापाप का परिणाम कांग्रेस व विपक्षी दलों को भुगतना पड़ेगा

रायपुर/ संवाददाता
छत्तीसगढ़ के मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय और भारतीय जनता पार्टी के राष्ट्रीय महामंत्री अरुण सिंह ने नारी शक्ति बन्दन (संशोधन) अधिनियम को लोकसभा में पारित नहीं होने देने के लिए कांग्रेस समेत इण्डी गठबंधन के सहयोगी दलों पर जमकर निशाना साधा है। नेता द्वय ने रविवार को यहाँ कुशाभाऊ ठाकरे परिसर स्थित प्रदेश कार्यालय में आहुत एक महती प्रकाार वार्ता में कहा कि महिलाओं के साथ किए गए इस महापाप का परिणाम कांग्रेस व विपक्षी दलों को भुगतना पड़ेगा।



मुख्यमंत्री विष्णुदेव साय ने कहा कि हमारे देश की आधी आबादी, माता-बहनों को देश के विकास में सहभागी बनाने और लोकसभा व विधानसभाओं में उनका 33 प्रतिशत नेतृत्व सुनिश्चित करने के लिए प्रधानमंत्री नरेंद्र मोदी व केंद्रीय गृह मंत्री अमित शाह के मार्गदर्शन में नारी शक्ति बन्दन

4.19 लाख से अधिक जांच, 4272 मरीजों को मिला विशेषज्ञ उपचार



■ मुख्यमंत्री स्वस्थ बस्तर अभियान से सुदूर अंचलों तक पहुंच रही सशक्त स्वास्थ्य सेवाएं

■ गांव-गांव पहुंचकर स्वास्थ्य सेवाएं दे रही टीमें, मरीजों को मिल रहा बेहतर उपचार

रायपुर/ संवाददाता
बस्तर संभाग के दूरस्थ एवं दुर्गम क्षेत्रों में स्वास्थ्य सेवाओं को सुदृढ़ और सुलभ बनाने की दिशा में संचालित मुख्यमंत्री स्वास्थ्य बस्तर अभियान सकारात्मक परिणामों के साथ निरंतर आगे बढ़ रहा है। अभियान के अंतर्गत स्वास्थ्य विभाग की टीमों द्वारा गांव-गांव पहुंचकर अब तक 4,19,898 से अधिक नागरिकों का स्वास्थ्य परीक्षण (स्क्रीनिंग) किया जा चुका है, जिससे बड़ी संख्या में लोगों को समय पर स्वास्थ्य सेवाओं का लाभ मिल रहा है। अभियान के दौरान चिन्हित मरीजों को तत्काल निःशुल्क जांच, दवा एवं उपचार उपलब्ध कराया जा रहा है। साथ ही गंभीर एवं जटिल मामलों में प्रभावी रेफरल व्यवस्था के माध्यम से अब

तक 4,272 मरीजों को उच्च स्वास्थ्य संस्थानों में रेफर कर विशेषज्ञ उपचार सुनिश्चित किया गया है। इससे दूरस्थ क्षेत्रों में रहने वाले नागरिकों को भी समय पर बेहतर चिकित्सा सुविधा प्राप्त हो रही है। स्वास्थ्य सेवाओं की पहुंच को और मजबूत करने के लिए प्राथमिक स्वास्थ्य केंद्रों, सामुदायिक स्वास्थ्य केंद्रों, जिला अस्पतालों, मेडिकल कॉलेजों एवं सुपर स्पेशियलिटी संस्थानों के बीच समन्वय स्थापित कर एक सुदृढ़ स्वास्थ्य तंत्र विकसित किया गया है। मोबाइल मेडिकल यूनिट्स एवं नियमित स्वास्थ्य शिविरों के माध्यम से विशेष रूप से पहुंचविहीन क्षेत्रों तक सेवाएं प्रभावी रूप से पहुंचाई जा रही हैं। अभियान के अंतर्गत प्रत्येक नागरिक का डिजिटल स्वास्थ्य प्रोफाइल (आभा) तैयार किया जा रहा है, जिससे भविष्य में स्वास्थ्य सेवाओं की निरंतरता और बेहतर प्रबंधन सुनिश्चित हो सके। साथ ही, यह पहल रोगों की समय पर पहचान और प्रभावी उपचार में भी सहायक सिद्ध हो रही है। स्वास्थ्य मंत्री श्री श्याम बिहारी जायसवाल ने बताया कि मुख्यमंत्री स्वस्थ बस्तर अभियान के तहत लगातार गांव-गांव पहुंचकर लोगों की स्वास्थ्य जांच की जा रही है। हमारा लक्ष्य है कि प्रत्येक नागरिक तक स्वास्थ्य सेवाएं पहुंचे और शत-प्रतिशत स्वास्थ्य परीक्षण सुनिश्चित किया जाए।

धधकती धरती: विकास की दौड़ या विनाश की ओर?



योगेश कुमार गोयल

प्रकृति पिछले कुछ समय से बार-बार भयानक आधियों, तूफान और ओलावृष्टि के रूप में यह गंभीर संकेत देती रही है कि विकास के नाम पर हम प्रकृति से भयानक तरीके से जिस तरह का खिलवाड़ कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप मौसम का मिजाज कब कहाँ किस कदर बदल जाए, कुछ भी भविष्यवाणी करना मुश्किल होता जा रहा है।

केवल भारत में बल्कि वैश्विक स्तर पर तापमान में लगातार हो रही बढ़ोतरी तथा मौसम का निरन्तर बिगड़ता मिजाज गंभीर चिंता का सबब बना है। हालाँकि जलवायु परिवर्तन से निपटने के लिए विगत वर्षों में दुनियाभर में दोहा, कोपेनहेगन, कानकुन इत्यादि बड़े-बड़े अंतर्राष्ट्रीय स्तर के सम्मेलन होते रहे हैं किन्तु उसके बावजूद इस दिशा में अभी तक ठोस कदम उठते नहीं देखे गए हैं। दरअसल वास्तविकता यही है कि राष्ट्रीय व अंतर्राष्ट्रीय मंचों पर प्रकृति के बिगड़ते मिजाज को लेकर चर्चाएं और चिंताएं तो बहुत होती हैं, तरह-तरह के संकल्प भी दोहराये जाते हैं किन्तु सुख-संसाधनों की अंधी चाहत, सकल घरेलू उत्पाद में वृद्धि, अनियंत्रित औद्योगिक विकास और रोजगार के अधिकाधिक अवसर पैदा करने के दबाव के चलते इस तरह की चर्चाएं और चिंताएं अर्थहीन होकर रह जाती हैं। ऐसे में पर्यावरण संरक्षण को लेकर लोगों में जागरूकता पैदान करने तथा पृथ्वी को बचाने के लिए प्रतिवर्ष 22 अप्रैल को 'विश्व पृथ्वी दिवस' मनाया जाता है। प्रकृति पिछले कुछ समय से बार-बार भयानक आधियों, तूफान और ओलावृष्टि के रूप में यह गंभीर संकेत देती रही है कि विकास के नाम पर हम प्रकृति से भयानक तरीके से जिस तरह का खिलवाड़ कर रहे हैं, उसके परिणामस्वरूप मौसम का मिजाज कब कहाँ किस कदर बदल जाए, कुछ भी भविष्यवाणी करना मुश्किल होता जा रहा है। ग्लोबल वार्मिंग के चलते दुनियाभर में मौसम का मिजाज किस कदर बदल रहा है, इसका अनुमान इसी से लगाया जा सकता है कि उत्तरी ध्रुव के तापमान में एक-दो नहीं बल्कि करीब 30 डिग्री तक की बढ़ोतरी देखी गई। मौसम की प्रतिकूलता साल दर साल किस कदर बढ़ती जा रही है, यह इसी से समझा जा सकता है कि कहीं भयानक सूखा तो कहीं बेमौसम अत्यधिक वर्षा, कहीं जबरदस्त बर्फबारी तो कहीं कड़के की ठंड, कभी-कभार ठंड में गर्मी का अहसास तो कहीं तूफान और कहीं भयानक प्राकृतिक आपदाएं, ये सब प्रकृति के साथ हमारे खिलवाड़ के ही दुष्परिणाम हैं और हमें यह सचेत करने के लिए पर्याप्त हैं कि अगर हम इसी प्रकार प्रकृति के संसाधनों का बुरे तरीके से दोहन करते रहे तो हमारे भविष्य की तस्वीर कैसी होने वाली है। हालाँकि प्रकृति कभी समुद्री तूफान तो कभी भूकम्प, कभी



सूखा तो कभी अकाल के रूप में अपना विकराल रूप दिखाकर हमें चेतावनी भी देती रही है किन्तु जलवायु परिवर्तन से निपटने के नाम पर वैश्विक चिंता व्यक्त करने से आगे हम शायद कुछ करना ही नहीं चाहते। हिन्दी अकादमी दिल्ली के सौजन्य से प्रकाशित पुस्तक 'प्रदूषण मुक्त साँसें' के अनुसार हम यह समझना ही नहीं चाहते कि पहाड़ों का सीना चीरकर हरे-भरे जंगलों को तबाह कर हम जो कंक्रीट के जंगल विकसित कर रहे हैं, वह वास्तव में विकास नहीं बल्कि विकास के नाम पर हम अपने विनाश का ही मार्ग प्रशस्त कर रहे हैं। पहाड़ों में बढ़ती गर्माहट के चलते हमें अक्सर घने वनों में भयानक आग लगने की खबरें सुनने को मिलती रहती हैं। पहाड़ों की इसी गर्माहट का सीधा असर निचले मैदानी इलाकों पर पड़ता है, जहाँ का पारा अब हर वर्ष बढ़ता जा रहा है। धरती का तापमान यदि इसी प्रकार साल दर साल बढ़ता रहा तो आने वाले वर्षों में हमें इसके बेहद गंभीर परिणाम भुगतने को तैयार रहना होगा क्योंकि हमें यह बखूबी समझ लेना होगा

कि जो प्रकृति हमें उपहार स्वरूप शुद्ध हवा, शुद्ध पानी, शुद्ध मिट्टी तथा ढेरों जनोपयोगी चीजें दे रही है, अगर मानवीय क्रियाकलापों द्वारा पैदा किए जा रहे पर्यावरण संकट के चलते प्रकृति कुपित होती है तो उसे सब कुछ नष्ट कर डालने में पल भर की भी देर नहीं लगेगी। करीब दो दशक पहले देश के कई राज्यों में जहाँ अप्रैल माह में अधिकतम तापमान औसतन 32-33 डिग्री रहता था, अब वह 40 के पार रहने लगा है। मौसम विभाग का तो अनुमान है कि अगले तीन दशकों में इन राज्यों में तापमान में वृद्धि 5 डिग्री तक दर्ज की जा सकती है और इसी प्रकार तापमान बढ़ता रहा तो एक ओर जहाँ जंगलों में आग लगने की घटनाओं में बढ़ोतरी होगी, वहीं धरती का करीब 20-30 प्रतिशत हिस्सा सूखे की चपेट में आ जाएगा तथा एक चौथाई हिस्सा रेगिस्तान बन जाएगा, जिसके दायरे में भारत सहित दक्षिण पूर्व एशिया, मध्य अमेरिका, दक्षिण आस्ट्रेलिया, दक्षिण यूरोप इत्यादि आएंगे। सवाल यह है कि धरती का तापमान बढ़ते जाने के प्रमुख कारण क्या हैं? ह्यप्रदूषण मुक्त साँसेंह पुस्तक के मुताबिक

इसका सबसे अहम कारण है ग्लोबल वार्मिंग, जो तमाम तरह की सुख-सुविधाएं व संसाधन जुटाने के लिए किए जाने वाले मानवीय क्रियाकलापों की ही देन है। पेट्रोल, डीजल से उत्पन्न होने वाले धुएँ ने वातावरण में कार्बन डाईऑक्साइड तथा ग्रीन हाउस गैसों की मात्रा को खतरनाक स्तर तक पहुँचा दिया है। विशेषज्ञों का अनुमान है कि वातावरण में पहले की अपेक्षा 30 फीसदी ज्यादा कार्बन डाईऑक्साइड मौजूद है, जिसकी मौसम का मिजाज बिगाड़ने में अहम भूमिका है। पेड़-पौधे कार्बन डाईऑक्साइड को अवशोषित कर पर्यावरण संतुलन बनाने में अहम भूमिका निभाते रहे हैं लेकिन पिछले कुछ दशकों में वन-क्षेत्रों को बड़े पैमाने पर कंक्रीट के जंगलों में तब्दील किया जाता रहा है। एक और अहम कारण है बेतहाशा जनसंख्या वृद्धि। जहाँ 20वीं सदी में वैश्विक जनसंख्या करीब 1.7 अरब थी, अब बढ़कर 8 अरब से भी ज्यादा हो चुकी है। अब सोचने वाली बात यह है कि धरती का क्षेत्रफल तो उतना ही रहेगा, इसलिए कई गुना बढ़ी आबादी के रहने और उसकी जरूरतें पूरी करने के लिए प्राकृतिक संसाधनों का बड़े पैमाने पर दोहन किया जा रहा है, इससे पर्यावरण की सेहत पर जो जबरदस्त प्रहार हुआ है, उसी का परिणाम है कि धरती बुरी तरह धधक रही है। ब्रिटेन के प्रख्यात भौतिक शास्त्री स्टीफन हॉकिंग की इस टिप्पणी को कैसे नजरअंदाज किया जा सकता है कि यदि मानव जाति की जनसंख्या इसी कदर बढ़ती रही और ऊर्जा की खपत दिन-प्रतिदिन इसी प्रकार होती रही तो करीब 600 वर्षों बाद पृथ्वी आग का गोला बनकर रह जाएगी। धरती का तापमान बढ़ते जाने का ही दुष्परिणाम है कि ध्रुवीय क्षेत्रों में बर्फ पिघल रही है, जिससे समुद्रों का जलस्तर बढ़ने के कारण दुनिया के कई शहरों के तलमन होने की आशंका जताई जाने लगी है। बहरहाल, अगर प्रकृति से खिलवाड़ कर पर्यावरण को क्षति पहुँचाकर हम स्वयं इन समस्याओं का कारण बने हैं और हम वाकई गंभीर पर्यावरणीय समस्याओं को लेकर चिंतित तो तो इन समस्याओं का निवारण भी हमें ही करना होगा ताकि हम प्रकृति के प्रकोप का भाजन होने से बच सकें अन्यथा प्रकृति से जिस बड़े पैमाने पर खिलवाड़ हो रहा है, उसका खामियाजा समस्त मानव जाति को अपने विनाश से चुकाना पड़ेगा।

संपादकीय

छात्रों का आत्मघात

कुरुक्षेत्र स्थित राष्ट्रीय प्रौद्योगिकी संस्थान में दो महीनों के दौरान चार छात्रों द्वारा आत्महत्या करना बेहद दुर्भाग्यपूर्ण है। यह संस्थान ही नहीं, शैक्षिक जगत और उनके परिवारों की भी अपूरणीय क्षति है। घटनाएं तकनीकी संस्थानों में तनाव प्रबंधन और मानसिक उपचार की खामियों को भी उजागर करती हैं। कोई व्यक्ति आत्मघाती कदम तब ही उठाता है जब उसे उम्मीद के सारे दरवाजे बंद नजर आते हैं। इस घातक कदम को उठाने से पहले वो तनाव के चरम से जुझते हुए किस मानसिक कष्ट से गुजरता होगा, अंदाज लगाना कठिन नहीं है। उसकी मन:स्थिति इतनी हताशा से भरी होती है कि आत्महत्या जैसा पीड़ादायक-घातक रास्ता उसे समाधान नजर आता है। विडंबना है कि हम संभावनाओं के इस दुखद अंत को मुकदर्शक बने देखते हैं। हम आत्महत्या के आंकड़ों व संख्या का जिक्र ही करते हैं, लेकिन उसे पाल-पोसकर बढ़ा करने वाले माँ-बाप पर हुए वज्रपात का अहसास नहीं करते। उच्च तकनीकी संस्थान की दहलीज तक पहुँचने में बच्चे कितना शरीर को गलाते हैं। उन्हें पालने-पोसने व बड़ा करने में माँ-बाप अपना खून पसीना एक कर देते हैं। हर बच्चा चांदी का चम्मच लेकर पैदा नहीं होता। उसके इस मुकाम तक पहुँचने में माता-पिता का त्याग शामिल होता है। कई अभिभावक बैंकों से कर्ज लेकर इन तकनीकी संस्थानों में बच्चों का एडमिशन कराते हैं। कई पैरेंट्स इस लायक बनाने के लिये पैसा कौचिंग संस्थानों में बहाते हैं। फिर एक दिन खबर आती है कि उनकी उम्मीदों ने आत्मघात कर लिया। हमें उनके दर्द को अपने दर्द की तरह महसूस करना चाहिए। इन घटनाओं के बाद एनआईटी ने एक पांच सदस्यीय जांच समिति बनायी है। लेकिन क्या समिति उन बच्चों का जीवन लौटा पाएगी? दूसरी ओर राज्यसभा सांसद जॉन ब्रिटान ने केंद्रीय शिक्षा मंत्री से प्रकरण में तुरंत हस्तक्षेप करने की मांग की है। वहीं एनआईटी ने छात्रों की समस्याओं को दूर करने के लिये कुछ अलग समितियाँ भी बनायी हैं। देश के विभिन्न उच्च तकनीकी संस्थानों में छात्रों के आत्मघात की खबरें अकसर आती हैं। कुछ साल पहले शिक्षा मंत्रालय ने संसद को बताया था कि साल 2018-2023 के बीच उच्च शिक्षा संस्थानों के 98 छात्रों ने आत्महत्या की थी। इनमें सबसे ज्यादा सबसे प्रतिष्ठित तकनीकी संस्थान आईआईटी में हुई थी। उसके बाद आत्मघात करने वाले छात्र एनआईटी और केंद्रीय विश्वविद्यालयों के थे। जाहिर है इन संस्थानों में कुछ तो ऐसा घट रहा है, जिससे हमारी संवेदनशील प्रतिभाएं साध्य नहीं बैठ पा रही हैं। विडंबना यह है कि देश के हर संस्थान व शासन-प्रशासन के स्तर पर आग लगने पर कुआँ खोदने की मनोवृत्ति बनी हुई है। इन संस्थानों में पूरे देश की चुनिंदा प्रतिभाएं ही पहुँचती हैं। जो एक गलाकट स्पर्धा के दौर से गुजरकर यहाँ तक आती हैं। लेकिन हमारी शिक्षा व्यवस्था का ढांचा ऐसा है जो बच्चों को किताबी कीड़ा तो बनाता है, लेकिन चुनौतियों से जुझने लायक नहीं बनाता। अब वे शिक्षक भी नहीं रहे जो छात्रों के सर्वांगीण विकास को ध्यान में रखकर पढ़ाएं।

चिंतन-मनन

मृत्यु का अर्थ

मृत्यु एक शात सत्य है। यह अनुभूति प्रत्यक्ष प्रमाणित है, फिर भी इसके संबंध में कोई दर्शन नहीं है। अब तक जितने ऋषि-महर्षि या संत-महंत हुए हैं, उन्होंने जीवन दर्शन की चर्चा की है। जीवन के बारे में ऐसी अनेक दृष्टियाँ उपलब्ध हैं जिनसे जीवन को सही रूप में समझा जा सकता है और जिया जा सकता है। किंतु मृत्यु को एक अवश्यंभावी घटना मात्र मानकर उपेक्षित कर दिया गया। मृत्यु के पीछ भी कोई दर्शन है, इस रहस्य को अधिक लोग पकड़ ही नहीं पाए। यही कारण है कि जीवन दर्शन की भाँति मृत्यु दर्शन जीवन में उपयोगी नहीं बन सका। जैन दर्शन एक ऐसा दर्शन है जिसने जीवन को जितना महत्व दिया, उतना ही महत्व मृत्यु को दिया। वशात्रे कि वह कलात्मक हो। कलात्मक जीवन जीने वाला व्यक्ति जीवन की सब विसंगतियों के मध्य जीता हुआ भी उसका सार तत्व खींच लेता है। इसी प्रकार मृत्यु की कला समझने वाला व्यक्ति भी मृत्यु से भयभीत न होकर उसे चुनौती देता है। जैन दर्शन में इसका सर्वांगीण विवेचन उपलब्ध है। मृत्यु का अर्थ है- आयुष्य प्राण चुक जाने पर जीव का स्थूल शरीर से वियोग इसके कई प्रकार हैं। उन सबका संक्षिप्त वर्गीकरण किया जाए तो मृत्यु के दो प्रकार होते हैं- बाल मरण और पंडित मरण। असंयम और असमाधिमय मरण बाल मरण है।अकाल मृत्यु, आत्महत्या, अज्ञान मरण आदि सभी प्रकार के मरण बाल मरण में अंतर्निहित हैं। संयम और समाधिमय मृत्यु पंडित मरण है। जीवन के अंतिम क्षणों में भी संयम और समाधि का स्पर्श हो जाए तो वह मरण पंडित मरण की गणना में आ जाता है। कुछ व्यक्ति मौत के नाम से ही घबराते हैं। वे जीवन को महत्व देते हैं। अपना-अपना चिंतन है। मुझे इस संबंध में अपने विचार देने हों तो मैं मृत्यु को वरीयता दूँगा। क्योंकि जीवन की सार्थकता भी मृत्यु पर ही निर्भर करती है। किसी व्यक्ति ने तपस्या की है और जागरूकता के साथ धर्म की आराधना की है, तो उसका फल समाधिमय मृत्यु ही है।



कांतिलाल मांडोट

पिछले दो दशकों में अंतरिक्ष गतिविधियों में जिस तेजी से वृद्धि हुई है, उसने मानवता को नई ऊँचाइयों तक पहुँचाया है, लेकिन इसके साथ एक गंभीर खतरा भी पैदा हो गया है। यह खतरा है अंतरिक्ष में तेजी से बढ़ते मलबे का, जिसे अब वैज्ञानिक हास्पेस डेब्रिसहू के नाम से पहचानते हैं। 2005 से 2025 के बीच भारत सहित दुनिया के कई देशों ने सैकड़ों उपग्रह अंतरिक्ष में स्थापित किए, जिससे पृथ्वी की कक्षा पहले की तुलना में कहीं अधिक भीड़भाड़ वाली हो गई है। इस स्थिति ने सैटेलाइट की सुरक्षा को एक बड़ी चुनौती बना दिया है। भारत की अंतरिक्ष एजेंसी भारतीय अंतरिक्ष अनुसंधान संगठन ने इस खतरे को गंभीरता से लेते हुए कई बार अपने उपग्रहों और मिशनों को संभावित टकराव से बचाने के लिए कक्षा में बदलाव किया है। हाल के वर्षों में उपग्रहों और चंद्र मिशनों को कुल 18 बार खतरे से बचाने के लिए रास्ता बदलना पड़ा, जिनमें से अधिकांश मामले अंतरिक्ष मलबे से जुड़े थे। यह केवल तकनीकी चुनौती नहीं है, बल्कि यह भविष्य के अंतरिक्ष अभियानों



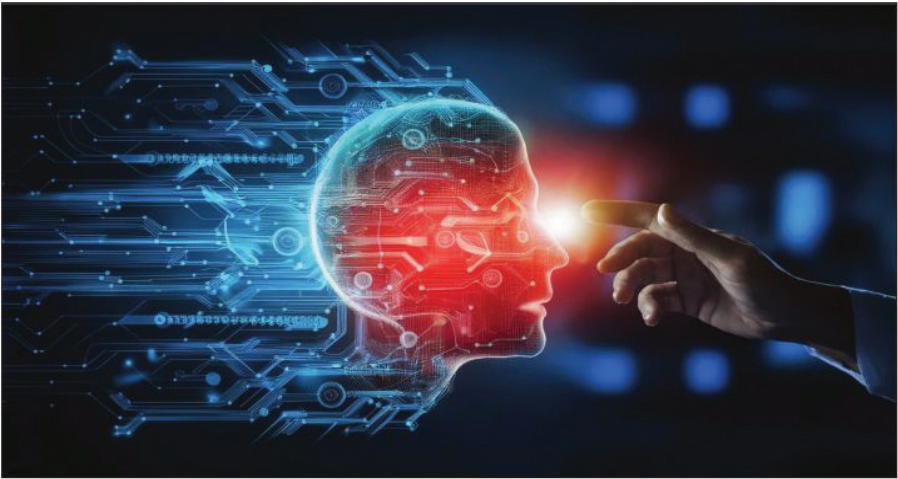
ललित गर्ग

मानव सभ्यता के विकास का इतिहास यदि देखा जाए तो यह स्पष्ट होता है कि हर नई तकनीक अपने साथ संभावनाओं और संकटों का एक द्वंद्व लेकर आती है। आज का समय भी इसी द्वंद्व से गुजर रहा है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता के रूप में विकसित हो रही नवीन तकनीक ने जीवन को सरल, तीव्र और सुविधाजनक बनाया है, किंतु इसके साथ ही यह मानवीय मूल्यों, नैतिकता और सामाजिक संतुलन के लिए एक गंभीर चुनौती भी बनकर उभर रही है। समाज के चिंतकों, दार्शनिकों और आध्यात्मिक नेतृत्व ने समय-समय पर इस विषय पर चिंता व्यक्त की है और हाल ही में पोप लियो 14 द्वारा व्यक्त आशंकाओं ने इस चिंता को वैश्विक विमर्श का केंद्र बना दिया है। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि यदि इस तकनीक का उपयोग नैतिक मर्यादाओं से परे जाकर किया गया, तो यह विश्व में विभाजन, भय, हिंसा और संघर्ष को बढ़ावा दे सकती है। यह चेतावनी केवल एक धार्मिक नेता की भावनात्मक प्रतिक्रिया नहीं है, बल्कि यह उस गहरी चिंता का संकेत है जो आज पूरी मानवता के भीतर कहीं न कहीं विद्यमान है। तकनीक अपने आप में न तो नैतिक होती है और न ही अनैतिक, किंतु उसका उपयोग उसे किसी भी दिशा में ले जा सकता है। वर्तमान समय में यह देखा जा रहा है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता का उपयोग केवल रहनात्मक और सकारात्मक कार्यों तक सीमित नहीं रह गया है। इसके माध्यम से बूढ़ी सूचनाओं का निर्माण, नकली चित्रों और ध्वनियों का सृजन तथा जनमत को प्रभावित करने के प्रयास तेजी से बढ़े हैं। चुनावी प्रक्रियाओं में इसका उपयोग लोकतंत्र की जड़ों को कमजोर कर सकता है। जब कोई मतदाता यह

की सुरक्षा और सफलता से भी जुड़ा हुआ विषय बन चुका है। अंतरिक्ष में मलबे की समस्या अब एक वैश्विक चिंता बन चुकी है। विभिन्न शोधों के अनुसार, पृथ्वी की कक्षा में 10 सेंटीमीटर से बड़े लगभग 40,000 मलबे के टुकड़े मौजूद हैं, जबकि 1 सेंटीमीटर से बड़े टुकड़ों की संख्या 12 लाख के करीब पहुँच चुकी है। यह मलबा पुराने उपग्रहों के अवशेष, रॉकेट के टूटे हिस्से और टकराव से उत्पन्न कणों का मिश्रण है। इनकी रफ्तार लगभग 28,000 किलोमीटर प्रति घंटा होती है, जो किसी भी सक्रिय उपग्रह के लिए बेहद खतरनाक है। इतनी तेज गति से चलने वाला एक छोटा सा टुकड़ा भी किसी सैटेलाइट को पूरी तरह नष्ट कर सकता है। भारत के चंद्र मिशन भी इस खतरे से अछूते नहीं हैं। चंद्रमन-2 के ऑर्बिटर को 2025 में कई बार अपनी कक्षा बदलनी पड़ी। अकेले इस मिशन के लिए 16 बार ऑर्बिट मैनुव्हर किए गए, ताकि संभावित टकराव से बचा जा सके। यह दशाता है कि अब अंतरिक्ष में काम करना पहले की तुलना में कहीं अधिक जटिल और जोखिम भरा हो गया है। हर मिशन को न केवल अपने वैज्ञानिक उद्देश्यों पर ध्यान देना होता है, बल्कि उसे सुरक्षित बनाए रखना भी उतना ही महत्वपूर्ण हो गया है। अंतरिक्ष में बढ़ती भीड़ का एक और असर लॉन्चिंग प्रक्रियाओं पर भी पड़ा है। कई बार रॉकेट लॉन्च को अंतिम क्षणों में टालना पड़ता है ताकि वह मलबे के रास्ते से बच सके। एक मामले में भारत को अपने एक मिशन की लॉन्चिंग 41 सेकंड तक टालनी पड़ी, ताकि संभावित टकराव से बचा जा सके। यह छोटी सी देरी दिखने में मामूली लग सकती है, लेकिन इसके पीछे अत्यंत जटिल

गणनाएं और सुरक्षा उपाय होते हैं। इस चुनौती से निपटने के लिए भारत ने ह्यनेत्रहू परियोजना की शुरुआत की है। प्रोजेक्ट नेत्र का उद्देश्य अंतरिक्ष में मौजूद मलबे और अन्य वस्तुओं की निगरानी करना है। इसके तहत उन्नत ट्रैकिंग सिस्टम विकसित किए जा रहे हैं, जो 10 सेंटीमीटर तक के मलबे को भी पहचान सकें। यह प्रणाली भविष्य में सैटेलाइट्स को समय रहते खतरे से बचाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाएगी। सिस्टम तैयार किया है, जो अंतरिक्ष में मौजूद वस्तुओं की निगरानी करता है और उपग्रहों को सुरक्षित कक्षा में स्थानांतरित करने में मदद करता है। वहीं यूरोपीय अंतरिक्ष एजेंसी मलबे को हटाने के लिए नई तकनीकों पर काम कर रही है, जिनमें छोटे कणों को जलाकर नष्ट करना या उनकी दिशा बदलना शामिल है। अंतरिक्ष में मलबे की समस्या केवल तकनीकी नहीं है, बल्कि यह अंतरराष्ट्रीय सहयोग की भी मांग करती है। जैसे-जैसे अधिक देश और निजी कंपनियाँ अंतरिक्ष में प्रवेश कर रही हैं, यह जरूरी हो गया है कि सभी एक साझा नियम और जिम्मेदारी के तहत काम करें। अगर इस दिशा में समय रहते ठोस कदम नहीं उठाए गए, तो भविष्य में अंतरिक्ष अभियानों की लागत और जोखिम दोनों बढ़ सकते हैं। स्पेस डेब्रिस का बढ़ता खतरा हमें यह सोचने पर मजबूर करता है कि अंतरिक्ष अब केवल खोज और विकास का

कृत्रिम बुद्धिमत्ता: सुविधा का वरदान या मूल्यों का संकट



समझ ही नहीं पाता कि जो वह देख रहा है या सुन रहा है वह सत्य है या निर्मित भ्रम, तब उसकी निर्णय क्षमता प्रभावित होती है। यह स्थिति लोकतांत्रिक संस्थाओं के प्रति विश्वास को कमजोर करती है। आज सोशल माध्यमों पर ऐसी अनेक घटनाएँ सामने आती हैं, जहाँ किसी व्यक्ति को नरेंद्र मोदी जैसे बड़े नेताओं के साथ दिखाया जाता है, जबकि वास्तविकता में ऐसा कभी हुआ ही नहीं होता। यह केवल व्यक्तिगत भ्रम नहीं, बल्कि सामाजिक स्तर पर विश्वास की संरचना को कमजोर करने वाला प्रवाह है। जब झूठ और सत्य के बीच की रेखा धुंधली हो जाती है, तब समाज में संशय, अविश्वास और अस्थिरता का वातावरण बनता है। कृत्रिम बुद्धिमत्ता का एक और चिंताजनक पक्ष है साइबर अपराधों में इसका बढ़ता उपयोग। आज अपराधी किसी व्यक्ति की आवाज की नकल करके उसके परिचितों को धोखा देने में सक्षम हो गए हैं। परिवार के सदस्य या अधिकारी बनकर धन की ठगी करना अब अत्यंत सरल हो गया है। इस प्रकार की घटनाओं ने अनेक लोगों की जीवन भर की कमाई को पल भर में समाप्त कर दिया है। यह केवल आर्थिक क्षति नहीं, बल्कि विश्वास और सुरक्षा की भावना पर गहरा आघात है। वित्तीय क्षेत्र में भी इस तकनीक का दुरुपयोग गंभीर संकट उत्पन्न कर सकता है। स्वचालित हमलों के माध्यम से बैंकिंग

व्यवस्था की कमजोरियों का लाभ उठाया जा सकता है। यदि इस प्रकार के हमले व्यापक स्तर पर होते हैं, तो यह केवल व्यक्तिगत हानि तक सीमित नहीं रहेगी, बल्कि राष्ट्रीय और वैश्विक अर्थव्यवस्था को भी अस्थिर कर सकते हैं। यह स्थिति उस समय और भी गंभीर हो जाती है जब नियामक संस्थाएँ इन जटिल तकनीकों की गति और स्वरूप को समझने में पीछे रह जाती हैं। पर्यावरणीय दृष्टि से भी यह तकनीक पूरी तरह निर्दोष नहीं है। विशाल आंकड़ा केंद्रों की स्थापना, ऊर्जा की अत्यधिक खपत, तथा खनिज संसाधनों का दोहन-ये सभी प्रकृति पर अतिरिक्त दबाव डालते हैं। कोबाल्ट और लिथियम जैसे खनिजों की बढ़ती मांग पर्यावरणीय असंतुलन और मानवीय शोषण दोनों को जन्म देती है। इस प्रकार यह तकनीक केवल सामाजिक या नैतिक ही नहीं, बल्कि पर्यावरणीय चुनौती भी बन रही है। इन सभी चिंताओं के बीच यह समझना आवश्यक है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता को नकारा नहीं जा सकता। यह आधुनिक जीवन का अभिन्न अंग बन चुकी है और चिकित्सा, शिक्षा, आपदा प्रबंधन तथा उत्पादन के क्षेत्र में इसके योगदान को अनदेखा नहीं किया जा सकता। समस्या तकनीक में नहीं, बल्कि उसके उपयोग के स्वरूप में है। यदि इसे मानवीय मूल्यों, नैतिकता और सामाजिक उत्तरदायित्व के साथ जोड़ा जाए, तो यह एक वरदान



क्षेत्र नहीं रह गया है, बल्कि इसकी सुरक्षा भी उतनी ही जरूरी हो गई है। आने वाले वर्षों में सैटेलाइट्स की संख्या और बढ़ेगी, जिससे यह चुनौती और गंभीर हो सकती है। ऐसे में वैज्ञानिकों और अंतरिक्ष एजेंसियों के लिए यह आवश्यक हो गया है कि वे नई तकनीकों और रणनीतियों के माध्यम से इस समस्या का समाधान निकालें। अंततः यह कहा जा सकता है कि अंतरिक्ष में बढ़ता मलबा मानवता के लिए एक चेतावनी है। यदि हम समय रहते सतर्क नहीं हुए, तो यह हमारी सबसे महत्वपूर्ण तकनीकी उपलब्धियों के लिए खतरा बन सकता है। इसलिए सैटेलाइट की सुरक्षा अब केवल एक तकनीकी मुद्दा नहीं, बल्कि वैश्विक जिम्मेदारी बन चुकी है।

सिद्ध हो सकती है। इसके लिए सबसे पहले आवश्यक है कि इसके विकास और उपयोग के लिए स्पष्ट और सशक्त नियम बनाए जाएँ। सरकारों और संस्थाओं को यह सुनिश्चित करना होगा कि इस तकनीक का उपयोग पारदर्शी, सुरक्षित और उत्तरदायी तरीके से हो। कंपनियों को अपने तंत्र में ऐसी व्यवस्थाएँ विकसित करनी चाहिए, जिससे किसी भी प्रकार की भ्रामक सामग्री की पहचान और नियंत्रण संभव हो सके। साथ ही नागरिकों की जागरूकता भी अत्यंत महत्वपूर्ण है। डिजिटल साक्षरता के बिना कोई भी समाज इस चुनौती का सामना नहीं कर सकता। लोगों को यह समझना होगा कि जो कुछ वे देख या सुन रहे हैं, वह हमेशा सत्य नहीं हो सकता। सत्यपन की प्रवृत्ति को विकसित करना समय की आवश्यकता है। नैतिकता के स्तर पर यह भी आवश्यक है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता के प्रशिक्षण के लिए उपयोग किए जाने वाले आंकड़े निष्पक्ष और उच्च गुणवत्ता वाले हों। यदि आधार ही पक्षपाती होगा, तो परिणाम भी पक्षपाती होंगे। इससे सामाजिक असमानता और भेदभाव को बढ़ावा मिल सकता है। इसलिए निष्पक्षता, पारदर्शिता, गोपनीयता और उत्तरदायित्व जैसे सिद्धांतों को इसके विकास का आधार बनाना होगा। सांस्कृतिक दृष्टि से भी यह ध्यान रखना आवश्यक है कि तकनीकी विकास हमारी परंपराओं और मूल्यों के साथ संतुलन बनाए रखे। हमारी सांस्कृतिक धरोहर का डिजिटलीकरण और संरक्षण इस दिशा में एक सकारात्मक कदम हो सकता है, किंतु यह भी सुनिश्चित करना होगा कि इसका उपयोग सम्मानपूर्वक और संवेदनशीलता के साथ किया जाए। साररूप में यह कहा जा सकता है कि कृत्रिम बुद्धिमत्ता एक शक्तिशाली साधन है, जो मानव जीवन को नई दिशा दे सकता है। किंतु यदि इसे नैतिकता से अलग कर दिया जाए, तो यह उसी गति से विनाश का कारण भी बन सकता है। आज आवश्यकता इस बात की है कि हम तकनीक के विकास के साथ-साथ अपने नैतिक मूल्यों को भी सुदृढ़ करें। विज्ञान और मानवीय संवेदना के बीच संतुलन ही वह मार्ग है, जो हमें सुरक्षित और समृद्ध भविष्य की ओर ले जा सकता है।

सलमान और नयनतारा की अगली फिल्म की शूटिंग शुरू

अनिल कपूर समेत कई सेलेब्स ने जाहिर की खुशी

सलमान खान फिल्म 'मातृभूमि' के बाद साउथ एक्ट्रेस नयनतारा के साथ अगली फिल्म करेंगे। इस फिल्म की शूटिंग से जुड़ा अपडेट मेकर्स ने साझा किया है। सलमान की इस फिल्म के लिए बॉलीवुड एक्टर्स एक्साइटेटड दिख रहे हैं। निर्देशक वामशी ने इंस्टाग्राम पर सलमान खान की आगामी फिल्म से जुड़ी जानकारी साझा की है। निर्देशक ने एक क्लैपरबोर्ड की तस्वीर अपलोड की, जिस पर 'मुहूर्त' लिखा हुआ था। इस तरह वामशी ने फैंस को बताया कि सलमान खान और नयनतारा की एक्शन ड्रामा फिल्म की शूटिंग शुरू हो चुकी है। शनिवार को इसका मुहूर्त शॉट किया गया।

कई सेलेब्स ने शूटिंग को लेकर

जाहिर की खुशी

डायरेक्टर वामशी की पोस्ट और सलमान खान की फिल्म को लेकर कई बॉलीवुड सेलेब्स उत्साहित दिखे। इस पोस्ट पर रिएक्शन देते हुए अनिल कपूर ने लिखा, 'वामशी, आपको बहुत-बहुत शुभकामनाएं।' इसी तरह नम्रता शिरोडकर ने भी कमेंट किया, 'बहुत-बहुत बधाई।' सलमान के फैंस ने भी इस पोस्ट को खूब लाइक किया है।



सलमान ने ही थी फिल्म की घोषणा

कुछ दिन पहले सलमान खान ने सोशल मीडिया पर पोस्ट करके अपनी इस फिल्म की घोषणा की थी। उन्होंने बताया था कि वो अपनी अगली फिल्म तेलुगु निर्देशक और निर्माता के साथ करेंगे। सलमान खान ने इंस्टाग्राम पर निर्देशक वामसी पेडिपल्ली के साथ एक तस्वीर भी शेयर की थी। इस तस्वीर के साथ सलमान ने लिखा, 'दिल, दिमाग और जिगर से इस अप्रैल से वामसी और दिल राजू के साथ।' शनिवार को इस फिल्म की शूटिंग शुरू भी हो गई।

पार्वती कृष्णा योगा के नाम पर हो रही ट्रोल्

सोशल मीडिया पर पार्वती कृष्णा को कई लोग फॉलो करते हैं, वह बतौर एक्सपर्ट फेस योगा सिखाती हैं। इसी वजह से वह एक विवाद का हिस्सा बन गईं और नेटिजंस द्वारा ट्रोल् भी की जा रही हैं। जानिए, क्या है ये पूरा मामला? और पार्वती कृष्णा का फिल्मी दुनिया से क्या रिश्ता है? पार्वती कृष्णा सोशल मीडिया पर दावा करती हैं कि वह फेस योगा से शॉर्प जॉलाइन बनाने में लोगों की मदद करती हैं। इससे चेहरा काफी हद तक बदल सकता है। लेकिन यह बात कुछ लोगों को हजम नहीं हुई। नेटिजंस ने फेस योगा से चेहरे में बदलाव की बात को नाकार और इसे गुमराह करने जैसा बताया। खासकर एक यूट्यूबर चंद्रशेखर रमेश ने पार्वती कृष्णा के दावों की आलोचना की।

पार्वती ने दिया ट्रोल् को जवाब

जब पार्वती कृष्णा की सोशल मीडिया पर ट्रोल्स ज्यादा होने लगी तो एक इंस्टाग्राम पोस्ट के जरिए उन्होंने जवाब दिया। इसमें उनका कहना है कि वह एक फेस योगा की एक्सपर्ट हैं, उनके पास सर्टिफिकेट भी है। वह कई लोगों की इस मामले में मदद कर चुकी हैं। ट्रोल् करने वालों पर भी पार्वती ने निशाना साधा है, इसमें यूट्यूबर चंद्रशेखर रमेश भी शामिल हैं। पार्वती के इंस्टाग्राम वीडियो पर कुछ लोगों ने उन्हें स्पॉट भी किया है।

फिल्मों से क्या है पार्वती कृष्णा का कनेक्शन

पार्वती कृष्णा एक दक्षिण भारतीय अभिनेत्री हैं। वह मलयालम फिल्मों में अभिनय करती हैं। साल 2014 में 'एंजल' नामक की फिल्म से पार्वती ने अपना करियर शुरू किया। फिल्मों के अलावा टीवी सीरियल भी किए। इसमें 'ईश्वरन साक्षीयायी' और 'राजी माजा' जैसे सीरियल शामिल हैं। पार्वती ने कई शो भी होस्ट किए। मलयालम का पॉपुलर शो 'किडिलम' को भी वह होस्ट कर चुकी हैं।

पांच साल में बनाया भारत में सबसे बड़ा रिकॉर्ड

संजय की चार फिल्मों ने ली 1000 करोड़ क्लब में एंट्री

बॉलीवुड के एक मशहूर अभिनेता के नाम बड़ा रिकॉर्ड दर्ज हो गया है। उनकी अलग-अलग चार फिल्मों ने 1000 करोड़ क्लब में एंट्री ली है। ऐसा कोई खान स्टार या साउथ का स्टार नहीं कर सका।

यह आम राय है कि बॉक्स ऑफिस पर खान स्टार्स और साउथ के बड़े अभिनेताओं का दबदबा रहता है। हालांकि इस बार मामला थोड़ा अलग है। पिछले कुछ वर्षों में एक एक्टर ने ऐसा रिकॉर्ड बनाया है जो लोगों को हैरान कर रहा है। उन्होंने अलग-अलग भाषाओं की फिल्मों की हैं। उनकी चार फिल्मों 1000 करोड़ क्लब में पहुंची हैं।

अभिनेता ने खान और साउथ के कलाकारों को छोड़ा पीछे

यह कोई और अभिनेता नहीं बल्कि बॉलीवुड के जाने-माने अभिनेता संजय दत्त हैं। उनकी चार अलग-अलग फिल्मों ने 1000 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई की है। इस रिकॉर्ड की खास बात यह है कि कई बड़े स्टार्स ऐसा रिकॉर्ड नहीं बना पाए हैं। इस लिस्ट में आमिर खान, शाहरुख खान और प्रभास जैसे सितारे हैं। हालांकि संजय दत्त इन सब लोगों से आगे हैं। कई सितारों की एक या दो ही फिल्मों 1000 करोड़ क्लब तक पहुंची हैं। लेकिन संजय दत्त की एक नहीं चार फिल्मों 1000 करोड़ क्लब तक पहुंची हैं।

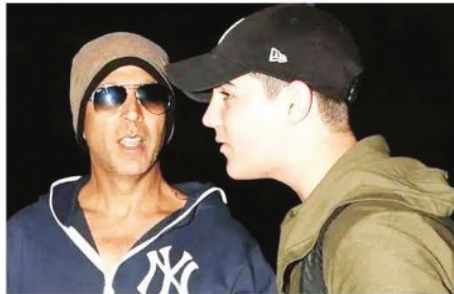


इन फिल्मों ने कमाए 1000 करोड़ रुपये से ज्यादा

संजय दत्त ने 'केजीएफ चैप्टर 2' (2022) में अपने विलेन के किरदार से काफी चर्चा बटोरी। संजय दत्त की यह पहली फिल्म थी जिसने 1000 करोड़ क्लब में एंट्री मारी थी। इसके बाद 'जवान' ने 1100 करोड़ रुपये से ज्यादा की कमाई की। इसमें शाहरुख खान लीड रोल में थे। 'धुरंधर' (2025) में भी संजय दत्त नजर आए थे। इस फिल्म ने 1300 करोड़ रुपये का आंकड़ा पार किया। इसी तरह से 'धुरंधर 2' (2026) ने एक महीने में 1700 करोड़ रुपये से भी ज्यादा का कलेक्शन किया है।

संजय दत्त के नाम बड़ा रिकॉर्ड

इस तरह से संजय दत्त अकेले ऐसे अभिनेता हैं, जिनकी 4 फिल्मों ने 1000 करोड़ रुपये के आंकड़े को पार किया है। उनका ये रिकॉर्ड काफी खास माना जा रहा है।



अक्षय कुमार बोले- मेरा बेटा 4500 की नौकरी कर रहा

एक्टर अक्षय कुमार अपनी फिल्म 'भूत बंगला' से फैंस को खूब हंसा रहे हैं। उन्होंने हाल ही में एक इंटरव्यू में बताया है कि उनके बेटे को फिल्मों में आने में कोई दिलचस्पी नहीं है और वो फैशन में अपना करियर बना रहा है।

अक्षय कुमार का बेटा आरव भाटिया

बॉलीवुड एक्टर अक्षय कुमार दो दशकों से अधिक समय से अपनी फिल्मों से लोगों का मनोरंजन कर रहे हैं। उनकी पत्नी दिव्यंका खन्ना भी कुछ समय के लिए फिल्म इंडस्ट्री का हिस्सा थीं। हालांकि, एक्टर ने हाल ही में खुलासा किया कि उनके बेटे आरव को फिल्मों में कोई दिलचस्पी नहीं है और वह फैशन में अपना करियर बना रहे हैं। उन्होंने ये भी बताया कि वो खुद कमा भी रहे हैं। अक्षय कुमार ने कहा कि उनका बेटा उनसे बहुत अलग नहीं है और आगे कहा, 'हम दोनों में बहुत समानता है। उसे फिटनेस का शौक है, और मुझे भी। वह लंबा है और बहुत ही फोकस्ड है। उसे काम करना पसंद है। लेकिन वह फिल्मों में नहीं आना चाहता। उसकी ऐसी कोई योजना नहीं है। वह फैशन में अपना करियर बनाना चाहता है।' वह बेचारा आज भी 4500 रुपये की नौकरी कर रहा है। अच्छी बात है, क्यों नहीं? वह गांवों में जाकर वहां से फैशन सीख रहा है, अलग-अलग तरह के प्रिंट्स वगैरह। मैं उसे ज्यादा उपदेश नहीं देता, लेकिन मैंने उसे हिदायत दी है कि किसी को नुकसान न पहुंचाए।

आरव भाटिया कौन हैं?

आरव भाटिया का जन्म 2002 में हुआ था और वे अक्षय कुमार और दिव्यंका खन्ना के सबसे बड़े बेटे हैं। 15 साल की उम्र में वे उच्च शिक्षा के लिए विदेश चले गए और फिलहाल लंदन के एक विश्वविद्यालय में पढ़ाई कर रहे हैं। उनकी छोटी बहन नितारा (जन्म 2012) अक्सर दिव्यंका के सोशल मीडिया पर नजर आती हैं, जबकि आरव लाइमलाइट से दूर रहना पसंद करते हैं।

सनी देओल-आमिर खान की फिल्म 'लाहौर 1947' का बदला जाएगा टाइटल

सनी देओल की अपकमिंग फिल्म 'लाहौर 1947' लंबे वक्त से चर्चा में है। कुछ समय पहले ऐसी खबरें सामने आई थीं, जिनमें दावा किया गया था कि इस फिल्म का नाम बदल सकता है। लेकिन ये महज अफवाह निकली। लेकिन अब एक बार फिर 'लाहौर 1947' का नाम बदले जाने की खबर सामने आई है।

सनी देओल ने 2026 की शुरुआत में 'बॉर्डर 2' बवाल काट दिया था। इसके बाद सनी देओल के पास कई बड़े फिल्ममेकर्स से ऑफर मिल रहे हैं। एक्टर के पास बहुत सी फिल्मों लाइनअप में शामिल हैं। सनी देओल इस साल 'गबरू', 'लाहौर 1947' और 'रामायण' से बॉक्स ऑफिस पर धमाका करने वाले हैं। हाल ही में ऐसी मीडिया रिपोर्ट्स सामने आईं, जिनमें दावा किया गया कि सनी देओल की 'लाहौर 1947' का नाम बदला जाएगा। लेकिन इनमें कोई सच्चाई नहीं थी। इसी बीच अब खबर मिली है कि वाकई में सनी देओल की फिल्म का नाम बदलने की पूरी तैयारी है। 'बॉर्डर 2' के बाद सनी देओल की 'लाहौर 1947' की अनाउंसमेंट की गई थी, जिसके बाद सो हो फैंस में इसे लेकर जबरदस्त फ्रेज है। ये फिल्म 13 अगस्त को थिएटरों में रिलीज होने वाली है। सनी देओल की इस फिल्म को आमिर खान प्रोड्यूस कर रहे हैं और राजकुमार संतोषी डायरेक्ट कर रहे हैं। बीते दिनों खुद आमिर खान ने बताया था कि 'लाहौर 1947' का नाम नहीं बदला जा रहा है। लेकिन अब खबर सामने आई है कि 'लाहौर 1947' का नाम बदला जा रहा है और इसका नया टाइटल भी पता चल गया है।

लाहौर 1947 का बदलेगा नाम?

मीडिया रिपोर्ट्स के मुताबिक, 2026 की मच अवेटेड फिल्म 'लाहौर 1947' का नाम बदलने के बारे में सोचा जा रहा है। राजकुमार संतोषी के डायरेक्शन में बनी सनी देओल और आमिर खान की फिल्म 'लाहौर 1947' का नाम बदलकर अब 'बंटवारा 1947' किया जा सकता है। हालांकि, अभी तक मेकर्स ने कोई ऐलान नहीं किया है लेकिन ऐसी उम्मीद है कि जल्द ही मेकर्स 'बंटवारा 1947' पर मुह्र लगा सकते हैं।



सोनाली ने बिग बॉस मराठी पर लगाए गंभीर आरोप



अभिनेत्री सोनाली राजत ने बिग बॉस मराठी सीजन 6 के निर्माताओं पर शो के दौरान अस्वच्छ (अनहाइजीनिक) रहने की स्थिति का आरोप लगाया है। उनका कहना है कि खराब वातावरण के कारण उन्हें खुजली की बीमारी हो गई। उन्होंने किचन से लेकर वॉशरूम तक में गंदगी होने और मरे हुए चूहे और कॉकरोच मौजूद होने के आरोप लगाए थे। सोशल मीडिया पर सोनाली ने अपने शरीर पर, पीठ, बांहें, पैरों और धड़ सहित, चकत्ते और निशान दिखाते हुए वीडियो साझा किए।

एक ही वॉशरूम इस्तेमाल करते थे 17 कंटेस्टेंट

सोनाली राजत ने अपने इंस्टाग्राम पर एक पोस्ट साझा की। इसमें उन्होंने स्थितियों को दयनीय बताया, जिसमें रसोई में चूहे किराने का सामान कुतर रहे थे और खाने में कॉकरोच पाए जा रहे थे। साथ ही पोस्ट में सोनाली ने अपनी कुछ तस्वीरें भी साझा की हैं, जिसमें उन्होंने अपने शरीर पर निकले दाने, निशान और चकत्ते दिखाए।



क्या आप भी जल्दी जल्दी नौकरी बदलते हैं? ये हैं फायदे एवं नुकसान

एक तो लोगों को नौकरी मिलना आज के समय में बेहद मुश्किल का कार्य है, वहीं कई लोग भाग्यशाली होते हैं, जिन्हें एक नौकरी छोड़ने से पहले ही दूसरी नौकरी मिल जाए! ऐसे में थोड़ी ग़ोथ के लिए लोग बाग जल्दी-जल्दी नौकरी चेंज करने लगते हैं। शायद आप भी उनमें से हों, किन्तु अगर आप भी जल्दी जल्दी नौकरी चेंज करते हैं तो यह जान लें कि शार्ट टर्म में बेशक इसके कुछ फायदे दिखें, किन्तु दीर्घावधि में इसका काफी नुक्सान होता है।

हालांकि अभी के समय में हालात यह हैं कि अब पहले की तरह लोग एक ही नौकरी पर बहुत दिन तक कार्य नहीं करते हैं, बल्कि नौकरी चेंज करने में वह अपनी ग़ोथ देखते हैं, और उसी अनुरूप डिस्मिशन भी लेते हैं। किन्तु जब बदलने का फैसला कुछ मामलों में बेशक ठीक लगता है, किन्तु कुछ मामलों में यह कहीं ना कहीं नुकसान देता है। आइये जानते हैं, अगर फायदे की बात करें तो आप यह जान लीजिए कि जॉब बदलने में सबसे पहले तो कुछ परसेंट ही सही, मगर आपको सैलरी बढ़े जाती है। निश्चित रूप से हर व्यक्ति चाहता है कि उसे उसके काम के अधिक से अधिक पैसे मिलें, और एक नौकरी में अगर उस अनुरूप ग़ोथ नहीं होती है, तो वह जॉब बदलना चाहता है, और ऐसे में उसे तुरंत ही ग़ोथ मिल जाती है।

वहीं अगर दूसरे फायदे की बात करें तो इससे पॉइंटुक्लर इंडस्ट्री में आपका नेटवर्क बेहतर होता है। अगर एक कंपनी में आप जॉब करते हैं, फिर दूसरी कंपनी में जाते हैं, और इस तरीके से अलग-अलग कंपनी में आपका बेश तैयार होता चला जाता है। इसके अलावा सबसे बड़ी बात यह है कि एक ही कंपनी में काम करने पर आप कैफर्टी ज़ोन में आ जाते हैं। आपकी स्किल कहीं ना कहीं सैचुरेट हो जाती है, तो दूसरी कंपनी में जब आप जाते हैं, तो वहां कुछ ना कुछ नया सीखने को अवसर मिलता है। चाहे वहां आपका नया सीनियर हो, चाहे वहां का इन्वायरमेंट हो, आप उस कंपनी से नई चीजें जरूर सीखते हैं, और यह वह चीज है जो आपको आने वाले दिनों में मजबूती करती है। इसके अलावा कई भारत लोग एक जगह पर कार्य करने से बोरे भी हो जाते हैं, ऐसे में नयी जॉब में उन्हें नयापन भी मिलता है। हालांकि यह इसका पॉजिटिव पक्ष है, किन्तु कुछ निगेटिव पक्ष भी हैं, जिन्हें आपको अवश्य ध्यान में रखना चाहिए। नुकसान की बात करें तो बार बार जॉब चेंज करने से पोजीशन के मामले में आपके आगे बढ़ने पर

असर पड़ सकता है। जी हाँ! एक ही कंपनी में जब आप काम करते हैं, तो वहां आपकी कार्टेड ग़ोथ होती है। वहां आपका प्रमोशन मिलता रहता है, किन्तु जब आप दूसरी कंपनी में जाते हैं, तो सीनियर पोजीशन पर आपको पहुंचने में कहीं ना कहीं दिक्कत होती है। इससे आपकी लॉयल्टी भी चेक की जाती है। अगर आप कुछ ज्यादा ही जॉब चेंज करते हैं, तब आपको किसी हायर पोजीशन पर जॉब देने से एचआर मैनेजर निश्चित ही कई बार सोचेगा। कंपनी अगर किसी जिम्मेदारी वाली पोजिट पर आप की हायरिंग कर भी लेती है, तो भी कंपनी ग़योरे नहीं हो पाती है कि आप आखिर कितने दिन जॉब करेंगे? कहीं आप बीच में ही जॉब छोड़ कर कहीं और तो नहीं चले जाएंगे? ऐसे में आप कंधे के घेरे में आ जाते हैं! यह कार्य सिर्फ पोजीशन के मामले की ही नहीं है, बल्कि प्रोजेक्ट अलॉटमेंट के मामले में भी है, तो क्लाइंट इंटरैक्शन के मामले में भी है। जब तक आप किसी कंपनी के लम्बे समय तक वफादार नहीं होते हैं, तब तक किसी बड़े प्रोजेक्ट की कमांड आपके हाथ में देने से निश्चित रूप से वह कंपनी हिचकिचाएगी। इसी प्रकार से बड़े क्लाइंट हैडलिंग में भी कंपनी आपको तब तक इवॉल्व नहीं करेगी, जब तक आप उसके प्रति लॉयल साबित न हो जाएँ! ऐसे में कहीं ना कहीं बड़ी संभावनाओं से आपके दूर रहने की शुरुआत हो जाती है। कंपनी बार-बार चेंज करने का आपके फाइनेंसियल पोजीशन पर भी खासा असर पड़ता है। चाहे आप क्रेडिट कार्ड एप्लीकेशन के लिए अप्लाई करें, चाहे आप होम लोन या दूसरे लोन के लिए अप्लाई करें आपकी फाइनेंसियल स्टैबिलिटी जरूर चेक की जाती है। आप किस कंपनी में कितने लंबे समय तक रहे हैं, यह आपके लिए एक प्लस प्वाइंट साबित होता है। वहीं अगर आप बार-बार अपनी जॉब चेंज करते हैं, तो कहीं ना कहीं आप की फाइनेंसियल स्टैबिलिटी पर एक सवाल खड़ा होता है।

मैनेजेरियल स्किल डेवलपमेंट पर पड़ता है फर्क

जी हाँ! ऊपर से आपको बेशक लगे कि आप कुछ चीजें ऊपर ऊपर समझ गए हैं, किन्तु प्रबंधन के गुणों को आप तब तक नहीं समझ सकते, जब तक आप किसी कंपनी में देर तक नहीं टिकेंगे। कहीं टिक कर काम करने के बाद ही कंपनी पॉलिटिक्स, प्रबंधन टेक्निक आप समझ पाते हैं। कंपनी अपने इन्वेस्टमेंट डिस्मिशन किस प्रकार लेती है, वास्तव में उसकी रुचि और भविष्य की योजनायें क्या हैं, यह आप गहराई से एक समय के बाद ही समझ पाते हैं। अगर बाद में आप कभी अपना उद्यम शुरू करना चाहें, तो इसलिए जरूरी है कि किसी कंपनी में आप देर तक टिक कर काम करें, अन्यथा आप उसकी गहराई को नहीं समझ पाएंगे।



विदेश ही नहीं, भारत में भी कई पॉलिमर और पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्रीज खुल चुकी हैं। नतीजतन, करियर विकल्प के रूप में केमिकल इंजीनियरिंग या पॉलिमर इंजीनियरिंग का महत्व कई गुना बढ़ गया है। अगर आप इस क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो 12वीं के बाद पॉलिमर साइंस में बीटेक कर सकते हैं।

मौजूदा तकनीकी दौर में पॉलिमर प्रोडक्ट्स का इस्तेमाल दिन-ब-दिन बढ़ता जा रहा है। इनमें प्लास्टिक, मोल्डेड सामग्री, सिंथेटिक फाइबर, रबर आदि शामिल हैं। ईको-फ्रेंडली और रीसाइकेबल प्लास्टिक के साथ इन सभी पॉलिमर प्रोडक्ट्स के उचित प्रबंधन की आवश्यकता भी समय के साथ बढ़ रही है। यह काम पॉलिमर इंजीनियर्स करते हैं। वे प्लांट डिजाइन, प्रोसेस डिजाइन और थर्मोडायनमिक्स के सिद्धांतों का उपयोग करते हैं। विदेश ही नहीं, भारत में भी कई पॉलिमर और पेट्रोकेमिकल इंडस्ट्रीज खुल चुकी हैं। नतीजतन, करियर विकल्प के रूप में केमिकल इंजीनियरिंग या पॉलिमर इंजीनियरिंग का महत्व कई गुना बढ़ गया है। अगर आप इस क्षेत्र में अपना करियर बनाना चाहते हैं तो 12वीं के बाद पॉलिमर साइंस में बीटेक कर सकते हैं। आज के इस लेख में हम आपको पॉलिमर साइंस में बीटेक के बाद करियर अवसर के बारे में जानकारी देंगे-

पॉलिमर इंजीनियरिंग में बीटेक के बाद सार्वजनिक क्षेत्र के अवसर

पॉलिमर इंजीनियरिंग में बीटेक के बाद आप सरकारी फर्मों जैसे सेंट्रल ग्लास एंड



प्रतिभावान विद्यार्थियों को तराशती योजना राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा

स्कॉलरशिप परीक्षा आयोजन के आधार पर कक्षा 8 की परीक्षाओं के लिए बैठे छात्रों के प्रत्येक समूह के लिए 1000 स्कॉलरशिप दी जाती हैं। स्कॉलरशिप की राशि प्रत्येक माह 500 रुपए होती है। अनुसूचित जाति के छात्रों के लिए 15 प्रतिशत, अनुसूचित जनजाति के छात्रों के लिए 7.5 प्रतिशत और विकलांग छात्रों के लिए 3 प्रतिशत स्कॉलरशिप आरक्षित होती है। स्कॉलरशिप का भुगतान सीधे प्राप्तकर्ता को न देकर संबंध संस्थान के प्रमुख के माध्यम से दिया जाता है।

चयन प्रक्रिया

प्रतिभाओं की पहचान दो स्तरीय लिखित परीक्षा के आधार पर की जाती है। प्रथम स्तर का चयन अलग-अलग राज्य/यूनियन टेरिटरीज द्वारा लिखित परीक्षा के माध्यम से किया जाता है। प्रथम स्तर की परीक्षा में सफल अभ्यर्थी ही एनसीईआरटी द्वारा संचालित द्वितीय स्तर की परीक्षा में भाग लेने के लिए पात्र माने जाते हैं। राज्य और यूनियन टेरिटरीज राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना की प्रथम स्तर की लिखित परीक्षा के साथ राष्ट्रीय आय एवं योग्यता आधारित छात्रवृत्ति योजना की भी परीक्षा आयोजित करते हैं।

पात्रता मान्यताप्राप्त विद्यालयों के 8वीं कक्षा में अध्ययनरत विद्यार्थी उस राज्य/यूनियन टेरिटरी द्वारा संचालित प्रथम स्तर की परीक्षा में बैठने के पात्र होते हैं, जिस राज्य में विद्यालय स्थित है। **आवेदन प्रपत्र** आवेदन-प्रपत्र प्राप्त करने के लिये राज्य संपर्क अधिकारी से संपर्क करें। आवेदन-प्रपत्र एनसीईआरटी की वेबसाइट से भी डाउनलोड किया जा सकता है। भरे हुए आवेदन प्रपत्र विद्यालय के प्राचार्य द्वारा हस्ताक्षरित होने चाहिए। आवेदन प्रपत्र जमा कराने की अंतिम तिथि तथा प्रपत्र कहां जमा कराया जायेगा, इस संबंध में संबंधित राज्य/संघ राज्य-क्षेत्र के संपर्क अधिकारी से पता किया जा सकता है। विभिन्न राज्यों की आवेदन प्रपत्र जमा कराने की अंतिम तिथियां भिन्न हो सकती हैं।

शुल्क

एनसीईआरटी द्वारा द्वितीय स्तर की परीक्षा के लिए कोई शुल्क नहीं लिया जाता। राज्य और यूनियन टेरिटरी प्रथम परीक्षा के लिए अपेक्षित शुल्क के भुगतान के लिए अधिसूचना जारी कर सकते हैं। इसलिये आवेदन प्रपत्र जमा करने से पहले कितनी और कैसे फीस दी जायेगी, इसका पता अपने राज्य संपर्क अधिकारी से लगा लेना चाहिए।

परीक्षा माध्यम

परीक्षा हिन्दी व अंग्रेजी के साथ असमी, बंगला, गुजराती, कन्नड़, मराठी, मलयालम, उड़िया, पंजाबी, तमिल, तेलुगु, उर्दू में संचालित की जाएगी। अभ्यर्थी आवेदन प्रपत्र में जिस भाषा में परीक्षा देना चाहते हैं, उस विकल्प का उल्लेख करें। इस के आधार पर ही अभ्यर्थी को उस भाषा में प्रश्न पुस्तिका उपलब्ध कराई जाएगी।

परीक्षा-विधि

8वीं के लिए लिखित परीक्षा की विधि इस प्रकार है- प्रथम स्तर की राज्य/यूनियन टेरिटरी स्तर पर संचालित परीक्षा में दो भाग होंगे (अ) मानसिक योग्यता परीक्षण (एमएटी) और (ब) शैक्षिक योग्यता परीक्षण (एसएटी)। इनमें सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और गणित विषय शामिल होंगे। द्वितीय स्तर की राष्ट्रीय स्तर पर संचालित परीक्षा में (अ) मानसिक योग्यता परीक्षण (एमएटी) और (ब) शैक्षिक योग्यता परीक्षण (एसएटी) शामिल होंगे। इनमें सामाजिक विज्ञान, विज्ञान और गणित विषय शामिल होंगे। (स) इंटरव्यू-इंटरव्यू के लिए उन्हीं अभ्यर्थियों को आमंत्रित किया जाएगा, जिन्होंने राष्ट्रीय स्तर पर संचालित लिखित परीक्षा उत्तीर्ण की हो।

लिखित परीक्षा

लिखित परीक्षा में प्रथम भाग एमएटी और द्वितीय भाग एसएटी शामिल होंगे। दोनों परीक्षाएं एक छोटे से अंतराल पर अलग-अलग ली जाएंगी। मानसिक योग्यता परीक्षा-एमएटी-चार विकल्पों सहित इसमें

भी रोजगार पा सकते हैं। उम्मीदवार विभिन्न इंजीनियरिंग संस्थानों में लेक्चरर पद का विकल्प भी चुन सकते हैं।

पॉलिमर इंजीनियरिंग में बीटेक के बाद निजी क्षेत्र के अवसर

जर्मन आधारित कंपनी विंडमोलर एंड होल्सर, अवसर अपने मैकेनिकल इंजीनियरिंग अनुभाग में संचालन करने के लिए पॉलिमर इंजीनियरों की भर्ती करती है। 17 से 8 साल के कार्य अनुभव वाले लोग एलाइड सॉल्यूशंस इंडिया प्राइवेट लिमिटेड में सेल्स/बिजनेस डेवलपमेंट सेक्शन में जा सकते हैं। यहाँ आप 35,000/- से रु 150,000/- प्रति माह तक की सैलरी पा सकते हैं। अपोलो टायर्स लिमिटेड, सिप्ट लिमिटेड आदि जैसी टायर कंपनियों को भी पॉलिमर इंजीनियर्स की जरूरत है। पॉलिमर इंजीनियरिंग में स्नातकों के लिए क्वालिटी इंजीनियर, प्रोडक्शन इंजीनियर्स/टेक्नोलॉजिस्ट, पॉलिमर स्पेशलिस्ट आदि सामान्य जॉब प्रोफाइल हैं।

नेशनल टेलेंट सर्च यानी राष्ट्रीय प्रतिभा खोज एनसीईआरटी की एक प्रमुख योजना है। इसका उद्देश्य प्रतिभावान विद्यार्थियों का पता लगाना और उनकी प्रतिभा को बढ़ाना है। इसके तहत विज्ञान, सामाजिक विज्ञान, इंजीनियरिंग, चिकित्सा विज्ञान, प्रबंधन और विधि जैसे क्षेत्रों को शामिल किया गया है। यह योजना प्रतिभावान विद्यार्थियों को मासिक स्कॉलरशिप के रूप में आर्थिक मदद दे कर सहयोग देती है। इस योजना में बेसिक साइंस, सामाजिक विज्ञान और वाणिज्य के पाठ्यक्रमों के लिए पीएचडी स्तर तक सहायता प्रदान की जाती है। व्यावसायिक पाठ्यक्रमों जैसे इंजीनियरिंग, चिकित्सा विज्ञान, प्रबंधन एवं विधि के लिए पीजी स्तर तक सहायता दी जाती है। एनसीईआरटी द्वारा राष्ट्रीय प्रतिभा खोज परीक्षा का आयोजन कक्षा 8 स्तर पर किया जाता है।

90 मल्टीचॉइस प्रश्न होंगे, जिनमें से केवल एक सही उत्तर होगा। प्रत्येक प्रश्न एक अंक का होगा। समय 90 मिनट होगा।

स्कॉलरशिप पाने की सामान्य शर्तें

स्कॉलरशिप प्राप्त करने के लिए यह जरूरी है कि उम्मीदवार अनुमोदित पाठ्यक्रमों में अध्ययनरत हो। वह अच्छा आचरण बनाए रखता हो (संस्थान प्रमुख द्वारा प्रमाणित) और अपना अध्ययन एक नियमित विद्यार्थी के रूप में कर रहा हो। बिना उचित अवकाश के अनुपस्थित न होता हो। पूर्णकालिक आधार पर अध्ययन करता हो। कोई रोजगार नहीं करता हो। राष्ट्रीय प्रतिभा खोज योजना पीएचडी कोर्स को छोड़ कर छात्रवृत्ति प्राप्तकर्ताओं को कोई अन्य स्कॉलरशिप स्वीकार करने से वंचित नहीं करती, अलबता किसी भी पाठ्यक्रम के लिए विदेश में अध्ययन के लिए कोई स्कॉलरशिप उपलब्ध नहीं होगी। यदि कोई प्राप्तकर्ता पंजीकरण/प्रवेश के एक माह के अंदर अपने पाठ्यक्रम का अध्ययन छोड़ता है तो उसे कोई स्कॉलरशिप नहीं दी जाएगी।



विजुअल मर्चेन्डाइजिंग के क्षेत्र में हैं अपार संभावनाएं

विजुअल मर्चेन्डाइजिंग शब्द भले ही कुछ लोगों के लिए नया हो, लेकिन सेल्स और एडवर्टाइजिंग के क्षेत्र से जुड़े लोग इससे गली-भांति वाकिफ हैं। विजुअल मर्चेन्डाइजिंग वास्तव में एक आर्ट है, जिसमें एक व्यक्ति किसी प्रॉडक्ट या सर्विस को क्लाइंट्स के सामने कुछ इस तरह पेश करता है ताकि वह सेल्स को बढ़ावा दे सके। अब इस कॉन्सेप्ट को रिटेल सेक्टर में एक मार्केटिंग टूल के रूप में उपयोग किया जा रहा है। इस क्षेत्र में वह सभी गतिविधियां शामिल हैं, जो रिटेल स्टोर्स में उत्पादों की बिक्री बढ़ाने में मदद करती हैं। उदाहरण के तौर पर, प्रॉडक्ट के संभावित ग्राहकों के माइंड को समझना और उपभोक्ताओं को उत्पाद के बारे में शिक्षित करना व प्रॉडक्ट को बेहद इफेक्ट व क्रिएटिव तरीके से पेश करना आदि। तो चलिए विस्तार से जानते हैं इस करियर के बारे में

क्या है विजुअल मर्चेन्डाइजिंग

एजुकेशन एक्सपर्ट बताते हैं कि विजुअल मर्चेन्डाइजिंग के क्षेत्र से जुड़े लोगों को विजुअल मर्चेन्डाइजर कहा जाता है। विजुअल मर्चेन्डाइजर ऐसे पेशेवर हैं जो किसी भी ब्रांड, एक चेहरे को देने के लिए जिम्मेदार हैं। वे ऑनलाइन शॉपर्स और रिटेल स्टोर दोनों के लिए विंडो और स्टोर डिस्प्ले में अवधारणा, डिजाइन और कार्यान्वयन करते हैं। वे स्टोर थीम की योजना बनाते हैं, डिस्प्ले के लिए प्रॉपर की व्यवस्था करते हैं, डिस्प्ले फिक्स्चर और लाइटिंग की व्यवस्था करते हैं, ओपनिंग से पहले स्टोर सेट करते हैं, फ्लोर प्लान के साथ काम करते हैं और डिस्प्ले को बनाने के लिए सेल्स फ्लोर पर स्टोर कर्मियों को प्रशिक्षित करते हैं। एक विजुअल मर्चेन्डाइजर का मुख्य उद्देश्य स्टोर की छवि के अनुरूप डिस्प्ले बनाना और अधिक ग्राहकों को स्टोर में लाना है।

शैक्षणिक योग्यता

आजकल ऐसे कई इंस्टीट्यूट हैं जो विजुअल मर्चेन्डाइजिंग से संबंधित सर्टिफिकेट व डिप्लोमा कोर्स करवाते हैं। इस कोर्स को करने के लिए छात्र का 12वीं पास होना आवश्यक है। हालांकि अधिकतर

जगहों पर विजुअल मर्चेन्डाइजिंग को फैशन डिजाइनिंग या फैशन टेक्नोलॉजी कोर्स के तहत पढ़ाया जाता है। करियर एक्सपर्ट के अनुसार, विजुअल मर्चेन्डाइजिंग के कोर्स में छात्रों को विजुअल मर्चेन्डाइजिंग से संबंधित विभिन्न पहलुओं पर प्रशिक्षित किया जाता है जैसे कि रिटेल स्टोर का लेआउट और डिजाइन, इंटीरियर डेकोरेशन, स्टोर के अंदर फर्नीचर और फिक्स्चर की स्थापना, स्टोर डिस्प्ले और उत्पादों की प्रस्तुति, विभिन्न संचार साधनों के उपयोग के जरिए ग्राहकों को आकर्षित करना।

व्यक्तिगत गुण

इस क्षेत्र में करियर देख रहे छात्रों में डिजाइनिंग और क्रिएटिविटी के गुण का होना बेहद आवश्यक है। एक विजुअल मर्चेन्डाइजर में बेहतरीन ऑर्गनाइजिंग स्किल्स होने के साथ-साथ प्लानिंग, प्रोजेक्ट मैनेजमेंट व टाइम मैनेजमेंट आदि विशेषताएं भी होनी चाहिए। इसके अलावा उनमें संचार व इंटरपर्सनल स्किल्स, समस्या सुलझाने की क्षमता और कंप्यूटर का ज्ञान होना भी जरूरी है। करियर एक्सपर्ट कहते हैं कि विजुअल मर्चेन्डाइजर को उपभोक्ताओं के मनोविज्ञान को जानना आना चाहिए और उसे रूझानों का भी पूर्वानुमान लगा लेना चाहिए।

संभावनाएं

शॉपिंग मॉल, फाइव स्टार होटल, बुटीक व रिटेल आउटलेट्स की संख्या बढ़ने के साथ ही विजुअल मर्चेन्डाइजर्स की मांग में भी काफी इजाफा हुआ है। विजुअल मर्चेन्डाइजर फैशन बुटीक, शॉपिंग मॉल, एम्पोरिया, डिजाइन कंपनी, आर्किटेक्चर फर्म, थीम पार्टी ऑर्गनाइजिंग कंपनी आदि में जॉब कर सकते हैं। वे प्रदर्शनियों, मेलों, ब्यूटी कॉन्स्ट्रेट, साइड सेरेमनी, मॉल, रिटेल में विंडो डिस्प्ले के लिए अनुबंध के आधार पर फ्रीलांसिंग भी कर सकते हैं।

आमदनी

इस क्षेत्र में एक फ्रेशर भी दस से पंद्रह हजार आसानी से कमा सकता है। वहीं कुछ समय के अनुभव के बाद आप किसी बड़े ब्रांड के रिटेल आउटलेट में काम कर सकते हैं और एक आकर्षक पैकेज पा सकते हैं।

प्रमुख संस्थान

- नेशनल इंस्टीट्यूट ऑफ डिजाइन, बैंगलोर
- द सिंथेटिक एंड आर्ट सिल्क मिल्स रिसर्च एसोसिएशन, मुम्बई
- स्कूल ऑफ कम्प्युनिकेशन एंड मैनेजमेंट स्टडीज, कोच्चि
- बिरला इंस्टीट्यूट ऑफ मैनेजमेंट टेक्नोलॉजी, ग्रेटर नोएडा



जायरीने हज का इस्तकबाल करना हम सबकी खुशानसीबी :इंद्रजीत सिंह

हज की अहमियत बताई आलिमे दीन ने, सभी ने मिल कर की दुआएं

भिलाई (ज्वाला एक्सप्रेस)। हज के मुबारक सफ़र पर जा रहे दुर्ग-भिलाई के खुशकिस्मत जायरीनों का इस्तकबालिया प्रोग्राम 19 अप्रैल रविवार की शाम कृष्णा गार्डन, शांति नगर में रखा गया। ट्रांसपोर्टर व समाजसेवी अब्दुल गनी खान और हज़रत बिलाल मस्जिद हुडको भिलाई के सदर शाहिद अहमद (रन्जन) की ओर से आयोजित इस प्रोग्राम में 40 से ज्यादा स्थानीय जायरीने हज का गुलपोशी और तोहफे के साथ इस्तकबाल किया गया।

इस दौरान जामा मस्जिद सेक्टर-6 के इमाम इकबाल अंजुम हैदर, जोन-3 मस्जिद के मुफ्ती जामाई कमर, हुडको हज़रत बिलाल मस्जिद के मुहम्मद माजिद और फरीद नगर नूरी मस्जिद के इमाम मौलाना जलालुद्दीन सहित मौजूद लोगों ने सभी जायरीनों के लिए हज के सफ़र की आसानी और हज की कुबूलियत के लिए दुआएं की। शुरुआत में अपनी

तकरीर में आलिमे दीन ने हज की अहमियत और इससे जुड़ी जरूरी बातें बयान की। सभी खुशकिस्मत जायरीनों को मुबारकबाद पेश की। फतिहा ख्वानी के साथ सलाम पेश किया गया और दुआएं की गई।

धार्मिक एकता की मिसाल बना आयोजन

इस आयोजन में सर्वधर्म प्रतिनिधियों ने शिरकत की। युवा समाजसेवी और सर्व समाज कल्याण समिति के प्रमुख इंद्रजीत सिंह छोटू ने जायरीनों का इस्तकबाल करते हुए कहा कि वहां जाने पर दुआओं में हम सभी को जरूर याद रखें। उन्होंने कहा कि इस मुबारक सफ़र पर जाने से पहले आप सभी का इस्तकबाल कर हम खुद को खुशानसीब मानते हैं।

छत्तीसगढ़ सिख पंचायत के अध्यक्ष जसवीर सिंह चहल ने कहा कि इस्पात नगरी भिलाई का भाईचारा

सफल बनाने में जावेद खान, हुसैन अशरफी, अकबर बब्बू अली, शाहनवाज कुरैशी, उज्जैर कादरी, जहीर अहमद, अमीर अहमद, खलील अहमद, इसरार खान, शादाब अहमद, परवेज सलमानी, सैयद अली, माबूद अहमद, इनाम वकील, फलकनुमा मस्जिद के सदर जाकिर काजी, बोरसी मस्जिद के डॉ. आदिल, शफी अहमद, अब्दुल हक, सिद्दीकी, मस्जिद हज़रत बिलाल के सेक्रेटरी नईमुद्दीन, आसिफ लाला कुरैशी, हनीफमोहम्मद, सलीम अहमद, नदीम निजामी और जमालुद्दीन सहित तमाम लोगों का योगदान रहा।

“भिलाई ज़िंदाबाद” का इफितताह, लेखक का किया सम्मान

इस मौके पर मौजूद तमाम मस्जिदों के इमाम और आयोजन समिति की ओर से इस्पात नगरी

भिलाई पर आधारित किताब “भिलाई ज़िंदाबाद, कुछ किस्से-कुछ कहानियाँ” का इफितताह (लोकार्पण) किया गया। जामा मस्जिद सेक्टर-6 के इमाम इकबाल अंजुम हैदर, जोन-3 मस्जिद के मुफ्ती जामाई कमर, हुडको हज़रत बिलाल मस्जिद के मुहम्मद माजिद और फरीद नगर नूरी मस्जिद के इमाम मौलाना जलालुद्दीन सहित तमाम लोगों ने अपने शहर भिलाई को जानने समझने के लिए इसे एक जरूरी किताब बताया। इस दौरान किताब के लेखक मुहम्मद जाकिर हुसैन का आयोजन समिति की तरफ से शाहिद अहमद रन्जन और तमाम आलिमे दीन ने इस्तकबाल किया। लेखक ने भी मंच से अपनी बात रखी। गौरतलब है कि “भिलाई ज़िंदाबाद” किताब का इजरा (विमोचन) गत दिनों राजधानी रायपुर में विख्यात फिल्मकार अनुराग बसु ने किया था। इस आयोजन में किताब अवाग को समर्पित की गई।

सुरक्षा मानकों के सुदृढ़ीकरण हेतु बीएसपी में महत्वपूर्ण समीक्षा बैठक आयोजित



भिलाई (ज्वाला एक्सप्रेस)। भिलाई इस्पात संयंत्र (बीएसपी) में सुरक्षा सुदृढ़ीकरण के उद्देश्य से सेफ्टी वारियर्स एवं सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग की एक महत्वपूर्ण बैठक आयोजित की गई। बैठक में सेफ्टी वारियर्स की गतिविधियों एवं सुरक्षा के क्षेत्र में उनके योगदान की विस्तृत समीक्षा की गई तथा आगामी कार्ययोजना पर गंभीरता से विचार-विमर्श किया गया। बैठक की अध्यक्षता महाप्रबंधक प्रभारी (सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग) श्री एस. के. अग्रवाल एवं मुख्य महाप्रबंधक (सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग) श्री देवदत्त सतपथी ने की। बैठक में सहित संयंत्र के

एवं सीट बेल्ट के अनिवार्य उपयोग तथा वाहन चलाते समय मोबाइल के उपयोग पर नियंत्रण हेतु प्रभावी उपायों पर भी चर्चा की गई। संयंत्र में गैस एवं युटिलिटी पाइपलाइन के नीचे पेड़ों एवं टहनियों के कारण संभावित क्षति की समस्या के समाधान हेतु एक सप्ताह का विशेष लाइन मॉनिटरिंग अभियान चलाने का निर्णय लिया गया।

इसके अंतर्गत दो समूह गठित कर पूरे संयंत्र क्षेत्र में विस्तृत निरीक्षण किया जाएगा, ताकि समय रहते आवश्यक सुधारात्मक कार्रवाई सुनिश्चित की जा सके।

महाप्रबंधक प्रभारी (सुरक्षा अभियांत्रिकी विभाग) श्री एस. के. अग्रवाल ने कहा सेफ्टी वारियर्स का योगदान हमारी 'जीरो हार्म' सुरक्षा दृष्टि को साकार करने में अत्यंत महत्वपूर्ण है। मुख्य महाप्रबंधक श्री देवदत्त सतपथी ने अपने उद्बोधन में कहा, यह समूह पूरे सेल परिवार के लिए प्रेरणा स्रोत है। उनका उत्साहपूर्ण योगदान बीएसपी में सुरक्षा व्यवस्था को और अधिक सुदृढ़ बनाने में महत्वपूर्ण भूमिका निभाता रहेगा।

शासकीय अशासकीय सभी विद्यालयों में हो ग्रीष्मकालीन अवकाश



दुर्ग (ज्वाला एक्सप्रेस)। संभाग आयुक्त श्री एस.एन. राठौर ने कहा कि संभाग अंतर्गत फसलों की पैदावारी बढ़ाने हेतु जैविक खाद के उपयोग की बढ़ावा दिया जाए। इसी प्रकार मिलेट्स फसलों जैसे ज्वार, बाजरा, रागी आदि की पैदावारी के लिए किसानों को प्रोत्साहित कर इनके प्रोसेसिंग एवं मार्केटिंग पर भी कृषि विभाग द्वारा आवश्यक पहल की जाए। बालोद स्थित मां दंतेश्वरी मैया

सहकारी शक्कर कारखाने में गन्ने की आपूर्ति हेतु गन्ने के फसल की पैदावारी हेतु दुर्ग जिले के किसानों को भी अनुदान राशि की व्यवस्था सुनिश्चित की जाए। संभाग मुख्यालय दुर्ग स्थित कृषि विभाग के प्रशिक्षण केन्द्र भवन का सदुपयोग हेतु कृषकों का प्रशिक्षण एवं भ्रमण आदि होते रहना चाहिए। उक्त भवन अन्य विभागों के प्रशिक्षण हेतु भी निर्धारित दर पर उपलब्ध कराई जाए।

जैविक खाद के उपयोग और मिलेट्स फसलों की पैदावारी को दें बढ़ावा- संभाग आयुक्त राठौर

1 मई से 10 जून तक सुशासन तिहार

संभाग आयुक्त ने ली संभाग स्तरीय अधिकारियों की बैठक

कड़ाई से पालन सुनिश्चित किया जाए। उन्होंने संयुक्त संचालक शिक्षा को निर्देशित किया कि बच्चों की सेहत को ध्यान में रखते हुए ग्रीष्मकालीन अवकाश में समर कैम्प आदि का आयोजन स्कूल प्रबंधन द्वारा नहीं कराये जाए। संभाग आयुक्त श्री राठौर ने सभी कार्यालयों में पहले मूवमेंट ई-ऑफिस प्रक्रिया के तहत और अधिकारी/कर्मचारियों की निर्धारित समय पर उपस्थिति हेतु बायोमेट्रिक प्रक्रिया अपनाने की जानकारी ली। संभाग आयुक्त श्री राठौर ने अधिकारियों को अवगत कराया कि शासन द्वारा आगामी 1 मई से 10 जून 2026 तक सुशासन तिहार 2026 संचालित किए जाने का निर्णय लिया गया है। इस दौरान ग्रामीण क्षेत्रों में प्रत्येक 15-20 ग्राम पंचायतों के समूह पर जन समस्या निवारण शिविर आयोजित किए जाएंगे। मुख्यमंत्री, मंत्रीगण एवं वरिष्ठ प्रशासनिक अधिकारियों द्वारा विकास कार्यों का औचक निरीक्षण पश्चात् जिला मुख्यालयों में समीक्षा बैठक आयोजित किए जाएंगे। संभाग आयुक्त श्री राठौर ने सभी संभागीय अधिकारियों को सुशासन तिहार हेतु विभागीय तैयारियां करने के निर्देश दिए। उन्होंने सभी कार्यालयों के चतुर्थ वर्ग कर्मचारियों हेतु ड्रेस कोड पर जोर देते हुए अधिकारियों को गंभीरता से ध्यान देने के निर्देश दिए। संभाग आयुक्त ने शासकीय सीसीएम कॉलेज कचांदुर में पीडब्ल्यूडी एवं विद्युत यांत्रिकी द्वारा कराए जा रहे निर्माण कार्यों की जानकारी ली एवं अधिकारियों को प्राथमिकता के साथ कार्य पूर्ण कराने के निर्देश दिए। बैठक में उपायुक्त (राजस्व) श्री पदुमलाल यादव और उपायुक्त (विकास) श्री संतोष ठाकुर एवं समस्त विभाग के अधिकारी उपस्थित रहे।

भिलाई में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने 109 एवं अहिवारा में 40 घरों का किया भ्रमण

दुर्ग। वार्ड-67 सेक्टर 7 पश्चिम सड़क 37 ए भिलाई नगर में पीलिया के मरीजों की जानकारी होने पर आज दिनांक 17 अप्रैल 2026 को डॉ. मनोज दानी, मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी, दुर्ग एवं डॉ. सी.बी.एस. बंजारे, जिला सर्वलेंस अधिकारी, दुर्ग के मार्गदर्शन में श्री विजय सेजुले, सुपरवाइजर, श्री हितेन्द्र कोसरे, बीडीओ एवं स्थानीय स्वास्थ्य कार्यकर्ता एवं मितानिनों के साथ प्रभावित क्षेत्र का भ्रमण किया गया है।

मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी डॉ. दानी से प्राप्त जानकारी अनुसार आज प्रभावित क्षेत्र में स्वास्थ्य विभाग की टीम ने 109 घरों का भ्रमण किया गया, जिसमें कोई भी पीलिया से ग्रसित नए मरीज नहीं मिले। उक्त संक्रमित क्षेत्र में पूर्व के कुल 37 पीलिया के मरीज हैं। जिनमें से 02 पुराने मरीज श्री शंकराचार्य इन्स्टीट्यूट ऑफ मेडिकल साइंस, भिलाई में उपचाररत हैं तथा 01 पुराना जिला चिकित्सालय का मरीज डिस्चार्ज हुए, इस प्रकार कुल भर्ती मरीज 02 हैं। उक्त प्रभावित क्षेत्र में नगर निगम भिलाई की मोबाइल मेडिकल यूनिट द्वारा लक्षणयुक्त मरीजों की



(सीबीसी/एलटीएफआरटीएफ वडाल) व अन्य आतिआवश्यक जांच की जा रही है, वर्तमान में स्थिति नियंत्रण में है। इसी प्रकार विकासखण्ड धमधा अंतर्गत 16 अप्रैल को वार्ड

नं-05,06,07 अहिवारा में पीलिया की मरीजों की जानकारी होने पर 17 अप्रैल को डॉ. मनोज दानी मुख्य चिकित्सा एवं स्वास्थ्य अधिकारी के निर्देशानुसार डॉ.सी.बी.एस.बंजारे जिला

प्रकार वर्तमान में उक्त प्रभावित क्षेत्र से कुल 03 मरीज (02 सामु.स्वा. केन्द्र अहिवारा व 01 श्री शंकराचार्य कॉलेज जुनवानी दुर्ग) में उपचार ले रहे हैं। वर्तमान में जिनकी स्थिति सामान्य है। आज प्रभावित क्षेत्र से कुल 07 पानी जांच हेतु सैम्पल चंदूलाल चंद्राकर मेडिकल कॉलेज कचांदुर दुर्ग भेजा गया एवं नगर पालिका अहिवारा द्वारा पाईप लाईन की मरम्मत की जा रही है व आवश्यकतानुसार लक्षण युक्त मरीजों का (सीबीसी/एलटीएफआरटीएफवडाल) व अन्य अति आवश्यक कार्य की जा रही है, वर्तमान में स्थिति पूर्णता नियंत्रण में है। पीलिया हेतु पीलिया प्रदूषित जल व भोजन से फैलने वाला संक्रामक रोग है जो विषाणुओं के संक्रमण से होता है। विषाणुओं के शरीर में प्रवेश करने के 15 से 50 दिनों के भीतर बीमारी के लक्षण प्रगट होते हैं। पीलिया के प्रमुख लक्षण भूख न लगना, पीले रंग की पेशाब होना, भोजन का स्वाद न आना, उल्टी लगना या होना, सिर में दर्द होना एवं कमजोरी तथा थकावट का अनुभव करना, पेट के दाहिने तरफ उपर की ओर दर्द होना, आंखें व त्वचा का रंग पीला होना है।

किराए पर संचालित दुकानों पर होगी कार्रवाई, सभी को नोटिस जारी करने के निर्देश



महापौर अलका बाघमार ने महिला समृद्धि बाजार का किया निरीक्षण, व्यवस्थाओं को लेकर दिए सख्त निर्देश

स्वच्छता में लापरवाही पर जताई नाराजगी, तत्काल सुधार के दिए आदेश

दुर्ग (ज्वाला एक्सप्रेस)। नगर पालिक निगम क्षेत्र अंतर्गत गौरवपथ स्थित महिला समृद्धि बाजार का आज महापौर अलका बाघमार द्वारा निरीक्षण किया गया। निरीक्षण के दौरान उन्होंने प्रभारी शेखर चन्द्राकर एवं निगम बाजार विभाग अमला के समृद्धि बाजार परिसर का जायजा लिया तथा उपस्थित व्यापारियों से सीधे संवाद कर उनकी समस्याओं को गंभीरता से सुना। महापौर ने निरीक्षण के दौरान

बाजार परिसर में व्याप्त स्वच्छता संबंधी खामियों पर नाराजगी व्यक्त करते हुए संबंधित अधिकारियों को तत्काल सुधार के निर्देश दिए। उन्होंने स्पष्ट रूप से कहा कि बाजार में आने वाले ग्राहकों, विशेषकर महिलाओं के लिए स्वच्छ एवं सुरक्षित वातावरण सुनिश्चित करना निगम की प्राथमिक ज़िम्मेदारी है। निरीक्षण के दौरान महापौर विभिन्न दुकानों में पहुंचीं और वहां की व्यवस्थाओं का बारीकी से अवलोकन किया। उन्होंने यह भी जानकारी ली कि परिसर में कितनी दुकानों का आर्वाटन हुआ है तथा कितनी दुकानें किराए पर संचालित हो रही हैं। इस पर उन्होंने सख्त रुख अपनाते हुए संबंधित अधिकारियों को निर्देशित किया कि नियमों के विरुद्ध संचालित सभी दुकानों पर तत्काल कार्रवाई की जाए तथा संबंधित दुकान संचालकों को उसी दिन नोटिस जारी किया जाए। महापौर अलका बाघमार ने कहा कि नगर निगम द्वारा महिला सशक्तिकरण एवं आत्मनिर्भरता को बढ़ावा देने के उद्देश्य से महिला समृद्धि बाजार की स्थापना की गई है। इस योजना का मूल उद्देश्य महिलाओं को व्यवसायिक अवसर उपलब्ध कराना और उन्हें आर्थिक रूप से सशक्त बनाना है। उन्होंने अधिकारियों को निर्देशित किया कि इस उद्देश्य की पूर्ति में किसी भी प्रकार की लापरवाही बर्दाश्त नहीं की जाएगी। उन्होंने यह भी कहा कि बाजार की व्यवस्थाओं को और बेहतर बनाने के लिए आवश्यक सुधार कार्य शीघ्र पूर्ण किए जाएं, ताकि यह बाजार शहर की महिलाओं के लिए एक आदर्श व्यापारिक केंद्र के रूप में विकसित हो सके।